1 कहाँ, कब और कैसे?

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. किसी अन्य देश की भाँति भारत के इतिहास को भी इसकी भौगोलिक रचना एवं स्थिति ने अत्यधिक प्रभावित किया है। भारत विश्व में सातवाँ सबसे विशाल देश है तथा एशिया महाद्वीप के अन्य देशों से पृथक् है। इसके उत्तर में चीन, नेपाल, तिब्बत तथा भूटान; उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान; पूर्व में म्यांमार (जिसे मध्यकाल में ब्रह्मदेश कहा जाता था।) और भारत से घिरा बांग्लादेश भारत के पड़ोसी देशों में सम्मिलित है। भारत की पृथक् स्थिति ने यहाँ एक स्वतंत्र सभ्यता एवं संस्कृति को जन्म दिया है। निःसंदेह, अनेक विदेशी शक्तियों से संपर्क के परिणामस्वरूप भारतीय कला एवं ज्ञान इनके प्रभाव से अछूते न रह सके, परंतु उनका यह प्रभाव बहुत सीमित था। भारत में अनेक आक्रमणकारी पश्चिम के दर्रों या पूर्वी श्रृंखलाओं से आए।

2. हमारे देश का इतिहास बहुत पुराना है। आर्यों ने सिंधु घाटी के लोगों का विनाश करके सिंधु प्रदेश पर अधिकार कर लिया तथा इस प्रदेश को सप्त-सैंधव (सात नदियों का देश) नाम दिया। यह प्रदेश वर्तमान पंजाब को इंगित करता है। आर्यों ने भारत के गंगा-यमुना के दोआब क्षेत्र पर अपना राज्य-विस्तार किया और इस क्षेत्र को ब्रह्मर्षि देश के नाम से पुकारा। कालान्तर में हिमालय तथा विंध्य पर्वतों के मध्य स्थित संपूर्ण देश को आर्यावर्त नाम दिया। इसके पश्चात् आर्यों ने दक्षिण की ओर अपना प्रभुत्व स्थापित किया और इसे दक्षिणापथ के नाम से संबोधित किया। पुराणों में वैदिक सभ्यता तथा संस्कृति की भूमि को भारत कहा गया है। 'मार्कण्डेय पुराण' तथा 'वायुपुराण' के अनुसार मनु की वंशावली में ऋषभ का पुत्र भरत के नाम पर देश का नाम भारत रखा गया, किंतु, वायुपुराण के एक अन्य प्रसंग में भरत को राजा दुष्यन्त तथा शकुंतला का पुत्र बताया गया है जिसके नाम पर यह देश भारत कहलाया। ऐसा भी माना जाता है कि सप्त-सैंधव प्रदेश में आर्यों के पाँच समुदाय भरत, त्रिशु,

अनु, द्रहु तथा यदी निवास करते थे, जिनमें से प्रथम समुदाय (भरत) ने देश के बड़े भू-भाग पर नियन्त्रण कर लिया। अतः इसलिए इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

3. मध्य युग का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करने वाले ऐतिहासिक स्रोतों को दो वर्गों में बाँटा जाता है–

(1) साहित्यिक स्रोत (2) पुरातात्विक स्रोत।

(1) साहित्यिक स्रोत–प्राचीनकाल में जब कागज उपलब्ध नहीं था, तब सभी साहित्यिक रचनाएँ, भोज-पत्रों, ताड़-पत्रों पर लिखी जाती थीं। कालांतर में जब कागज की खोज कर ली गयी, तब इन्हें कागज पर लिखा गया और फिर पुस्तकों का रूप दिया गया। इस प्रकार के साहित्यिक स्रोत निम्नलिखित हैं–

(i) आत्मकथाएँ तथा वृत्तांत–प्राचीनकाल में अन्य देशों के विभिन्न यात्री भारत आये, यहाँ रहे और भारत के जीवन का अध्ययन किया फिर उन्होंने अपने उस ज्ञान को लिखकर एक पुस्तक का रूप दिया। ये पुस्तकें वृत्तांत कहलाती हैं। इन यात्रियों में प्रमुख हैं–चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेनसांग आदि।

(ii) साहित्यिक कृतियाँ–कुछ लेखकों ने अनेक साहित्यिक रचनाएँ कीं, जिनमें 'तुजुक-ए-बाबरी', 'आइन-ए-अकबरी', 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' प्रमुख हैं।

(iii) साहित्य–बिल्हण का 'विक्रमाकदेवचरित', क्षेमेंद्र का 'कुमारपाल चरित', बाणभट्ट का 'हर्षचरित', दंडी का 'दशकुमार चरित्र', चंदबरदाई का 'पृथ्वीराजरासो' आदि प्रमुख हैं।

(2) पुरातात्विक स्रोत

(i) शिलालेख–चट्टानों तथा स्तंभों पर शिलालेखों के रूप में अनेक प्रकार के अवशेष मिलते हैं, जो हमारी विरासत के महत्त्वपूर्ण अंश हैं। इन्होंने पूर्वकाल के बारे में हमारे ज्ञान में अत्यधिक वृद्धि की है तथा ये हमारी विरासत की अमूल्य निधि बन गए हैं। ये शिलालेख प्रायः अनेक प्राचीन भाषाओं एवं लिपियों में लिखे हुए मिलते हैं। ये लेख लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का वर्णन करते हैं। शिलालेख भारत में अधिकांशतः दक्षिण भारत के मंदिरों, किले की दीवारों; जैसे- दिल्ली में लाल किले की दीवारों आदि पर पाए जाते हैं। इन लेखों के अध्ययन से संबंधित विज्ञान को शिलालेखशास्त्र कहते हैं। इन शिलालेखों का

अध्ययन करने वाले व्यक्ति को शिलालेखशास्त्री कहते हैं।

(ii) सिक्के–सिक्कों तथा धन से संबंधित मुद्रा जैसे कागजी मुद्रा एवं टोकन संग्रह को मुद्राशास्त्र कहते हैं। वह व्यक्ति जो इन सिक्कों का अध्ययन करता है, उसे मुद्राशास्त्री कहते हैं। सिक्के इतिहास का प्रतिबिंब होते हैं।

(iii) स्मारक, किले, मंदिर एवं महल–मध्य युग के दौरान हमें स्थापत्य कला अपने अत्यंत उन्नत स्वरूप में प्राप्त होती है। इस काल के शासकों ने हमें अनेक स्मारक, मस्जिद, मंदिर, किले तथा महल दिए हैं।

(iv) चित्रकारी–अजंता की गुफाएँ छतों एवं दीवारों पर की गई सुंदर नक्काशी एवं चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं। मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित बाघ गुफाएँ सुंदर चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध हैं।

(v) साहित्य और संगीत–इस युग में समृद्ध साहित्य का विकास हुआ। अमीर खुसरो दिल्ली सल्तनत के सर्वाधिक प्रसिद्ध फारसी भाषा के कवियों में से थे, उस समय उन्हें 'बुलबुल-ए-हिंद' कहा जाता था। इस युग के अन्य प्रसिद्ध कवि अमीर हसन देहलवी तथा कश्मीरी ब्राह्मण बाणभट्ट थे। बाणभट्ट का उल्लेखनीय कार्य फिरदौसी द्वारा रचित 'शाहनामा' का हिंदी अनुवाद था। उसने संगीत के क्षेत्र में अनेक फारसी रचनाएँ दी। भक्ति संतों ने सामान्य जनों की भाषा में शिक्षाएँ दीं। कबीर ने अपने 'दोहे' भोजपुरी में तथा मलिक मुहम्मद जायसी ने 'पद्मावत' की रचना अवधी भाषा में की। इस युग मे हिंदी की दो प्रमुख बोलियाँ भोजपुरी एवं अवधी थीं।

4. **आत्मकथाएँ तथा वृत्तांत–**प्राचीन काल में अन्य देशों के विभिन्न यात्री भारत आये, यहाँ रहे और भारत के जीवन का अध्ययन किया फिर उन्होंने अपने उस ज्ञान को लिखकर एक पुस्तक का रूप दिया। ये पुस्तकें वृत्तांत कहलाती हैं। इन यात्रियों में प्रमुख हैं–चीनी यात्री फाह्यान, ह्वेनसांग आदि। अनेक विद्वानों तथा लेखकों ने विभिन्न शासकों के जीवन तथा राजवंशों के वर्णन (वृत्तांत) लिखे, जिनमें कल्हण की 'राजतरंगिणी', क्षेमेंद्र का 'कुमारपालचरित' तथा चंदबरदाई का 'पृथ्वीराजरासो', अबुल फजल का 'अकबरनामा' आदि प्रमुख हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत के वर्तमान नाम–इंडिया तथा हिंदुस्तान-प्रारंभ में देश पर आक्रमण

करने वाले फारसी तथा यूनानी आक्रमणकारियों द्वारा दिए गए। इस देश की ओर उनकी प्रगति प्रायः 'इंडस' अथवा 'सिंधु' नदी के सीमित क्षेत्र में हुई, जिसके कारण उन्होंने इसे सिंधु-भूमि' कहा। फारस अथवा ईरान के निवासी अंग्रेजी के 'S' (एस) अक्षर का उच्चारण 'H' (एच) के रूप में करते हैं, जिसके कारण उन्होंने 'सिंधु' को 'हिंदू' उच्चारित किया। 'इंडिया' शब्द प्राचीन फारसी शिलालेखों के 'सिंधु' (इंडस) अथवा 'हिंदू' से मिला है। 'हिंदू' शब्द के अत्यधिक निकट शब्द 'हिंद' अथवा 'हिंदुस्तान' बाद के नाम हैं जिनका प्रयोग मध्यकालीन मुस्लिमों द्वारा किया गया। इनमें से अधिकांश नाम आज भी प्रचलित हैं, जो लोग सिंधु अथवा इंडस नदी क्षेत्र में आकर बस गए, उन्हें हिंदू कहा गया।

2. प्राचीन काल में भारतीय उपमहाद्वीप में नेपाल, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के कुछ भाग सम्मिलित थे। भारत के उत्तर में चीन, नेपाल, तिब्बत तथा भूटान, उत्तर-पश्चिम में पाकिस्तान एवं अफगानिस्तान, पूर्व में म्यांमार तथा भारत से घिरा बांग्लादेश है।

3. मध्यकाल के कुछ प्रसिद्ध किलें हैं–दिल्ली का लालकिला, तुगलकाबाद का पुराना किला, चित्तौड़, आगरा और ग्वालियर के किले तथा जोधपुर, जैसलमेर, जयपुर आदि के भव्य महल।

4. मध्यकाल में संगीत की स्थिति काफी अच्छी थी। अकबरसहित कई मुगल सम्राट संगीत के संरक्षक थे। अकबर के दरबार में तानसेन सर्वश्रेष्ठ संगीतकार था। अतः कहा जाता है कि तानसेन के संगीत में ऐसा जादुई प्रभाव था कि उससे बादल भी वर्षा करने लगते थे। संगीत की हिंदुस्तानी शैली भी इसी युग में फली-फूली।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत के पड़ोसी देश हैं–नेपाल, चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार, तिब्बत।

2. आर्यों ने उत्तर-पश्चिम के खैबर, गोमल, बोलन, काराकोरम तथा तोची दर्रों से भारत में प्रवेश किया।

3. स्तंभों, चट्टानों, गुफाओं की दीवारों, ताम्रपत्रों आदि पर पाए गए लेखों को शिलालेख कहते हैं। इन लेखों के अध्ययन से संबंधित विज्ञान को शिलालेख शास्त्र कहते हैं।

4. सिक्कों तथा धन से संबंधित मुद्रा; जैसे–कागजी मुद्रा एवं टोकन संग्रह

को मुद्राशास्त्र कहते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) ब्रह्मदेश 2. (ii) तीन कालों में

3. (iv) कल्हण 4. (iii) तंजौर में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. भारत विश्व में **सातवाँ** सबसे विशाल देश है।
2. धातु मुद्रा के प्रचलन से देश का आर्थिक **विकास** हुआ।
3. अकबरनामा **अबुलफजल** की रचना है।
4. शिलालेखों का अध्ययन करने वाले व्यक्ति को **शिलालेखशास्त्री** कहते हैं।
5. मध्य प्रदेश के धार जिले में **बाघ** गुफाएँ स्थित हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✗)

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

2 उत्तर भारत के राज्य (700 से 1200 ई० तक)

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. 9वीं शताब्दी से 13वीं शताब्दी तक तीन प्रमुख शक्तियों पाल वंश, गुर्जर-प्रतिहार वंश तथा राजपूतों ने उत्तर भारत पर राज्य किया। इन तीनों शक्तियों एवं राष्ट्रकूट के शासकों ने कन्नौज पर अधिकार करने के लिए संघर्ष किया। ये तीनों शक्तियाँ उत्तरी भारत एवं उसके प्रमुख शहर कन्नौज पर अधिकार स्थापित करने के लिए एक-दूसरे की शत्रु बन गईं। कन्नौज गंगा नदी के किनारे स्थित था। इस नगर पर विजय प्राप्त करके ऊपरी गंगा घाटी के समृद्ध संसाधनों, व्यापार एवं कृषि पर अधिकार स्थापित करना इन शक्तियों का प्रमुख लक्ष्य था। अतः इन तीनों शक्तियों

के मध्य एक लड़ाई लड़ी गई, जिसे त्रिकोणीय संघर्ष के नाम से जाना जाता है। इस संघर्ष के फलस्वरूप तीनों राजवंशों की शक्ति क्षीण हो गई।

पालवंश के शासकों ने उत्तर भारत बंगाल एवं बिहार में विशाल साम्राज्य स्थापित करके लगभग 400 वर्षों तक शासन किया। 8वीं शताब्दी में गोपाल ने पाल शासन की स्थापना की। उसने तथा उसके उत्तराधिकारियों धर्मपाल एवं देवपाल ने लंबे समय तक बंगाल में स्थिर सरकार चलाई। इसके बाद राजपूत शासकों ने मध्यकालीन भारतीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। इतिहास में इनका उदय 9वीं शताब्दी के आस-पास मिलता है। राजपूत राज्य सदैव आपस में लड़ते रहते थे। राजपूत शब्द का शाब्दिक अर्थ है–राजा अथवा शासक के पुत्र। वे प्रायः दो क्षत्रिय वंशों-राम का सूर्यवंश (सूर्य परिवार) तथा कृष्ण का चंद्रवंश (चंद्र परिवार) से संबद्ध थे। चार महत्त्वपूर्ण वंश–प्रतिहार, चौहान, सोलंकी तथा परमार अग्निकुल से संबंध रखते थे। गुर्जर-प्रतिहार राजपूतों का महत्त्वपूर्ण वंश था। राजा भोज के शासन काल (836-885 ई०) में प्रतिहार शासक अधिक शक्तिशाली हो गए। प्रतिहार शासन के पश्चात् उत्तर भारत में शासन करने वाले राजपूत वंश चौहान एवं गहड़वाल अथवा राठौर थे।

2. 12वीं शताब्दी के अंत में गोर के शासक मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया। सन् 1175 ई० में उसने मुलतान पर आक्रमण करके उस पर अपना अधिकार कर लिया। उसके बाद गुजरात के शासक भीमदेव सोलंकी की तरफ रुख किया। भीमदेव और मुहम्मद गौरी के मध्य सन् 1190 ई० में भीषण युद्ध हुआ, जिसमें मुहम्मद गौरी की करारी हार हुई। सन् 1191 में उसने तराइन के मैदान में दिल्ली-अजमेर के राजपूत शासक पृथ्वीराज चौहान से पराजय का मुँह देखा, लेकिन 1192 में उसने तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली पर कब्जा कर लिया। उसके कुछ ही समय पश्चात कन्नौज के शासक एवं पृथ्वीराज चौहान के निकटतम संबंधी जयचंद को युद्ध में पराजित करके कन्नौज पर कब्जा किया। इसके बाद उसने पेशावर, लाहौर, स्यालकोट आदि पर आक्रमण करके जीत लिया।

   इस प्रकार मुहम्मद गौरी ने उत्तरी भारत में एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इसके उपरान्त वह अपने सामंत कुतुबद्दीन ऐबक को भारत में अपने विजित क्षेत्रों को गवर्नर नियुक्त करके स्वदेश लौट गया।

सन् 1206 ई० में पंजाब के विद्रोही खोखरों ने उसकी हत्या कर दी।

3. राजपूत शासक जिस प्रकार पराक्रमी योद्धा तथा वीर थे उसी प्रकार ये साहित्य, शिक्षा, ज्ञान तथा कला के महान संरक्षक भी थे। भवभूति नामक नाटककार कन्नौज के शासक यशोवर्मन के दरबार में थे। प्रतिहारों के दरबार में राजशेखर एक महान व्याकरणाचार्य थे। कल्हण की 'राजतरंगिणी', बिल्हण की 'विक्रमांकदेवचरित', महाकवि चंदबरदाई का 'पृथ्वीराज रासो', राजपूत शासन काल में ही लिखे गए।

   राजपूत शासन काल में स्थापत्य कला की अनेक शैलियाँ प्रचलित थीं जिनमें नगर तथा बेसर शैली प्रमुख थी। उत्तर भारत के अधिकांश मंदिर नागर शैली में तथा मध्य भारत के मंदिर बेसर शेली में बनाये गये। दक्षिण भारत के मंदिर द्रविड़ शैली में बनाये गये हैं। प्रत्येक मंदिर में एक विमान (शिखर), जगमोहन (दर्शक सभागार) नाट्यमंडल (नृत्य सभागार) तथा भोग मंडप (भोग सभागार) होता था। राजपूत काल के प्रसिद्ध मंदिर- कोणार्क का सूर्य मंदिर, पंचायतन मंदिर, माउंट आबू के दिलवाड़ा मंदिर, सोमनाथ मंदिर आदि। ये मंदिर स्थापत्य कला के अनुपम उदाहरण हैं।

4. **(अ) परमार–**परमार राजपूत भी प्रारंभ में राष्ट्रकूट शासकों के सामंत थे। इन्होंने अपने आपको 968 ई० में स्वतंत्र घोषित करके अपने राज्य की स्थापना की। परमार वंश का एक महान प्रतापी राजा मुंज था, जिसने हूणों तथा कल्चुरियों को हराकर गुजरात तथा माउंट आबू को अपने राज्य में मिला लिया था। मुंज का भतीजा राजा भोज सबसे प्रसिद्ध परमार शासक था जिसने अपनी राजधानी धारा को बनाया था।

   (ब) चंदेल–नवीं शताब्दी में नानुक चंदेल द्वारा इस वंश की स्थापना की गयी जो प्रतिहारों के मुखिया को नष्ट कर, जोजाभुक्ति (आधुनिक बुंदेलखंड) के दक्षिणी भाग का स्वामी बन गया था। इस वंश का सातवाँ राजा यशोवर्मा ही व्यावहारिक दृष्टि से पहला स्वतंत्र शासक हुआ। उसने कालिंजर के प्रसिद्ध दुर्ग को अपने अधिकार में कर लिया और खजुराहो के मंदिर (कंदरिया महादेव मंदिर) में स्थापनार्थ विष्णु की बहुमूल्य प्रतिमा उपहार स्वरूप देने के लिए प्रतिहार राजा देवपाल को मजबूर कर दिया। उसका पुत्र धंग (950-1008 ई०) चंदेल वंश का सबसे अधिक प्रतापी राजा हुआ। उसने अपने राज्य का विस्तार करते हुए तत्कालीन भारतीय राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लिया। इसके अतिरिक्त कीर्तिवर्मन तथा

मदनवर्मन भी चंदेलों के प्रमुख शासक थे।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. महमूद गजनवी प्रथम तुर्की था जिसने भारत पर आक्रमण किया। वह गजनी का महान शासक था। उसने 1001 से 1025 ई० के बीच 25 वर्षों में भारत पर लगभग 17 बार आक्रमण किए और भारत को लूटकर पुनः अपने देश चला गया।

2. महमूद गजनवी मात्र एक लुटेरा था। उसका मुख्य उद्देश्य भारत की संपत्ति को लूटना मात्र था शासन करना नहीं। जबकि मुहम्मद गौरी का मुख्य उद्देश्य भारत को जीतकर शासन करना था। इसीलिए उसने उत्तरी भारत को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया। महमूद गजनवी हमेशा अपने आक्रमणों में विजयी रहा, जबकि गौरी को कई युद्धों में पराजय का सामना भी करना पड़ा।

3. कन्नौज हर्ष की राजधानी थी। उसने गंगा घाटी तक का क्षेत्र अपने अधीन कर लिया। हर्ष की संपन्नता का कारण कन्नौज पर अधिकार करना भी एक था, क्योंकि कन्नौज का क्षेत्र गंगा तथा यमुना नदियों के मध्य का क्षेत्र है इसलिए इसे दोआब कहते हैं। यह क्षेत्र संपूर्ण भारत में अत्यधिक उपजाऊ भूमि वाला रहा है। इसलिए अन्य शासकों की भी निगाहें कन्नौज पर उठती रहीं और एक समय वह आ गया कि कन्नौज पर शासन करने के लिए तीन महाशक्तियाँ–पाल, प्रतिहार तथा राष्ट्रकूट-780-910 ई० अर्थात् 130 वर्षों तक परस्पर लड़ती रहीं। अतः इसी संघर्ष को भारतीय इतिहास में त्रिदलीय संघर्ष कहा गया। इतने लंबे समय के संघर्ष के उपरांत इन तीनों महाशक्तियों में से कोई भी चिरस्थायी न रह सका। परिणामस्वरूप शीघ्र ही तीसरी शक्ति ने कन्नौज पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस त्रिदलीय संघर्ष ने तीनों राज्यों को कमजोर कर दिया तथा यही उनके पतन का कारण भी बना।

4. बिहार तथा बंगाल राज्यों में पाल राजाओं का शासन था। हर्ष की मृत्यु के बाद तथा पालों के सिंहासनारूढ़ होने के पूर्व बंगाल का इतिहास रहस्य की पर्तों में छिपा था। पश्चिम बंगाल में शशांक की मृत्यु के बाद उसके सामंतों ने 'गोपाल' को राजा चुना जिसने पाल वंश की स्थापना की। गोपाल ने (750-770 ई०) तक शासन किया। उसके पुत्र धर्मपाल (770-810 ई०) ने 40 वर्षों तक शासन किया और राज्य का विस्तार किया। उसने कन्नौज पर भी अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। उसका पुत्र

देवपाल भी महान प्रतापी शासक था। 12वीं शताब्दी के अंत में बख्तियार खिलजी ने पाल राज्य पर आक्रमण करके उसे नष्ट कर दिया।
पाल राजाओं ने अपने पड़ोसी राज्यों से सामरिक संधियों द्वारा भी अपनी शक्ति का विस्तार किया था। उनके पास विशाल शक्तिशाली सेना थी। उन्होंने दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों से घनिष्ठ व्यापारिक संबंध स्थापित कर लिए थे, जिसके कारण उनकी शक्ति तथा समृद्धि में वृद्धि हुई।
पाल राजाओं ने नालंदा विश्वविद्यालय में सुधार कार्य किए तथा बिहार में विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की। उन्होंने अनेक बौद्ध विहार बनवाए।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. राजपूत राजस्थान के वीर क्षत्रिय जाति के लोग थे, जिनका एकमात्र कार्य युद्ध करना था।
2. अग्निकुल में उत्पन्न चार राजपूत थे–परमार, प्रतिहार, चौहान तथा सोलंकी।
3. दक्षिण भारत में कल्याण में रहने वाले चालुक्य वंश के लोग थे।
4. भारत में मुस्लिम साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मुहम्मद गौरी था।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iv) गुर्जर-प्रतिहार 2. (iv) तराइन के युद्ध में
3. (iii) 17 बार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. पाल राजाओं ने **नालंदा** विश्वविद्यालय में सुधार किए।
2. कन्नौज **हर्ष** की राजधानी थी।
3. गौरी को गुजरात के शासक **पृथ्वीराज द्वितीय** ने पराजित किया।
4. परमार **राष्ट्रकूट शासकों** के सामंत थे।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

3 दक्षिण भारत का इतिहास (700 से 1200 ई० तक)

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. चोल प्रशासन–चोल इतिहास का सर्वाधिक प्रसिद्ध पहलू उसका सुसंगठित एवं कुशल प्रशासनिक तंत्र था। राजा प्रदेश का सर्वोच्च अध्यक्ष (मुखिया) होता था। वह विभिन्न विभागों में मंत्रियों एवं अध्यक्ष की नियुक्ति करता था। वह सभी कानूनों का स्रोत था। चोल राजाओं एवं रानियों को उच्च सम्मान प्राप्त था। राजराजा प्रथम एवं उसकी रानियों की अनेक काँस्य प्रतिमाएँ पाई गई हैं। राजा थल सेना एवं जल सेना दोनों का अध्यक्ष होता था। चोल शासकों की सेना में 60000 हाथी तथा थल एवं जल सेना में 150000 सैनिक थे। उनकी जल सेना युद्ध-सामग्री से पूर्ण सुसज्जित एवं शक्तिशाली थी। चोल शासकों के पास अश्वारोही सेना भी थी।

चोल साम्राज्य छह मंडलों (प्रांतों) में विभक्त था, जिनका प्रशासन राज्यपालों; सामान्यतः शाही राजकुमारों अथवा वायसरायों द्वारा किया जाता था। ये मंडल जनपदों अथवा 'वलानडु' में विभाजित थे। प्रत्येक 'वलनाडु' अनेक नाडू अथवा ग्रामों में विभाजित था। विशाल नगर-कस्बों को 'तानियूर' कहा जाता था। ग्रामों का प्रशासन स्थानीय स्वशासन तंत्र द्वारा किया जाता था। उर, सभा तथा नगरम तीन ग्रामसभाएँ थीं, जिन्होंने ग्रामों के व्यक्तियों को एकत्रित एवं संगठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। 'उर' ब्राह्मण ग्रामों में वयस्क व्यक्तियों की एक साधारण सभा थी, जिन्हें 'अग्रहार' कहा जाता था। महासभा अनेक समितियों जैसे बाग पर्यवेक्षण समिति, तालाब, मैदान, न्याय प्रशासन आदि में विभाजित थी। महासभा ग्राम के लिए ऋण उठाती थी तथा ग्राम कोषागार का रख-रखाव करती थी।

2. दक्षिण भारत में पल्लव शासकों ने कला और स्थापत्य का विकास किया, उन्होंने चट्टानों को काटकर सुप्रसिद्ध 'रथ' मंदिर बनवाए तथा बादामी, ऐहोल और पट्टदकल में सुंदर मूर्तियों से अलंकृत मंदिर भी बनवाए। होयसलों ने हेलेबिड में होयसलेश्वर मंदिर का निर्माण कराया।

चोल शासकों ने कला और स्थापत्य में विशेष योगदान दिया। तंजौर तथा गंगईकोंडाचोलपुरम में अनेक सुंदर बाग, सभागारों, मंदिरों तथा महलों का निर्माण कराया। तंजौर का बृह्देश्वर मंदिर द्रविड़ शैली की स्थापत्य कला के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। ऊँचे गोपुरम (द्वार), मूर्तियों से अलंकृत, बहुमंजिले विमान, विशाल बैठे हुए पवित्र बैल नंदी की प्रतिमा आदि इस मंदिर की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

3. दक्षिण भारत में हिंदू धर्म सबसे अधिक प्रचलित था, यद्यपि बौद्ध, जैन, इस्लाम तथा ईसाई धर्म भी प्रचलित थे। हिंदू धर्म के दो प्रमुख संप्रदाय शैव तथा वैष्णव थे। कर्नाटक के 'बासव' द्वारा स्थापित लिंगायत संप्रदाय चोल साम्राज्य में अत्यधिक लोकप्रिय संप्रदाय था। दक्षिण भारत में 'नयनार' तथा 'अलवार' संतों द्वारा भक्ति आंदोलन शुरू किया गया। शिव तथा विष्णु की प्रशंसा में भक्ति गीतों की रचना स्थानीय भाषा में की गयी।

आदिशंकर का जन्म लगभग 788 ई० में केरल में हुआ था। वे एक महान दार्शनिक थे। अल्पायु में ही वे वेदों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में पारंगत हो गए थे। वह विद्वान लोगों के साथ शास्त्रार्थ (वाद-विवाद) द्वारा अपने दर्शन का प्रचार करते थे। उन्होंने अद्वैत दर्शन की दस शाखाओं का गठन किया तथा देश के चारों कोनों में चार मठ (धाम)–बद्रीनाथ, द्वारिका, पुरी तथा काँची में स्थापित किए। तिरुपति में 1017 ई० में जन्मे रामानुज भी उस युग के महान दार्शनिक थे। उन्होंने भक्ति को वेदों से जोड़ने का प्रयास किया तथा इस प्रकार वेदों को अधिक लोकप्रिय बनाया। माधव ने कृष्ण-भक्ति का प्रचार किया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. कल्याणी के चालुक्यों को पश्चिमी चालुक्य भी कहा जाता है। इस राजवंश की स्थापना 973 ई० में तैलप द्वितीय ने की थी। उनका साम्राज्य उत्तर में कृष्णा नदी से लेकर दक्षिण में आंध्र प्रदेश के वेंगी तक विस्तृत था। वेंगी पर पूर्वी चालुक्यों का अधिकार था। पश्चिमी चालुक्य राष्ट्रकूटों के सामंत थे। तैलप द्वितीय (973-997 ई०) ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया तथा राष्ट्रकूटों के अन्य सभी सामंतों को हरा दिया। उसने मालवा के परमारों को भी हराकर मालवा पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार गुजरात पर भी उसका नियंत्रण हो गया।

विक्रमादित्य चतुर्थ (1076-1126 ई०) सबसे उल्लेखनीय चालुक्य शासक था, जिसने आंध्र के कुछ भागों पर अधिकार कर लिया तथा द्वार-समुद्र के होयसलों, उचांगी के पांड्यों, गोवा के कदंबों तथा अन्य सामंतों को भी हरा दिया। किंतु उसके कमजोर उत्तराधिकारी अपने क्षेत्रों पर नियंत्रण न रख सके तथा चालुक्य वंश का पतन होने लगा।

2. आदिशंकर का जन्म लगभग 788 ई० में केरल में हुआ था। वे एक महान दार्शनिक थे। अल्पायु में ही वे वेदों तथा अन्य धार्मिक ग्रंथों में पारंगत हो गए थे। वे विद्वान लोगों के साथ शास्त्रार्थ (वाद-विवाद) द्वारा अपने दर्शन का प्रचार करते थे। उन्होंने अद्वैत दर्शन की दस शाखाओं का गठन किया तथा देश के चारों कोनों में चार मठ (धाम)–बद्रीनाथ, द्वारिका, पुरी तथा काँची में स्थापित किए।
3. दक्षिण भारत में सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन में मंदिरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। वे ऐसी संस्थाओं के रूप में विकसित हुए जहाँ लोगों को शिक्षा, चिकित्सा तथा रोजगार प्राप्त होता था। प्रत्येक मंदिर से एक मठ संबद्ध होता था, जहाँ विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा, भोजन, वस्त्र तथा आवासीय सुविधाएँ प्रदान की जाती थीं। इसके अतिरिक्त मंदिरों के प्रांगण में मेले तथा उत्सव जैसी सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती थीं। ये गतिविधियाँ दक्षिण भारत के मंदिरों में आज भी प्रचलित हैं।

(ग) अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. दकन राज्यों में राष्ट्रकूट, पश्चिमी चालुक्य, यादव, काकतीय एवं होयसल आदि राज्य सम्मिलित हैं।
2. चोल राजाओं के दो महान् शासक राजराजा प्रथम और राजेंद्र प्रथम थे।
3. कंबन ने रामायण तमिल भाषा में लिखी।
4. दक्षिण भारत में हिंदू धर्म की प्रधानता थी।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) परांतक   2. (iv) राजराजा प्रथम ने
3. (ii) पल्लव

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. **तैलप द्वितीय** ने **973** ई० में चालुक्य वंश की स्थापना की थी।
2. कंबन ने **तमिल** भाषा में रामायण लिखी।

3. **द्वार-समुद्र** होयसलों की राजधानी थी।
4. चोल साम्राज्य छह प्रांतों में बँटा था, जिन्हें **वलानडु** कहा जाता था।
5. विंध्य पर्वतों के दक्षिण में स्थित भूमि को **दक्षिण भारत** कहा जाता है।
6. **पल्लव** और **चोल शासक** कला एवं स्थापत्य के दो महान संरक्षक थे।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

परियोजना कार्य

छात्र स्वयं करें।

4 दिल्ली सल्तनत

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **गुलाम (दास) वंश (1206 ई० से 1290 ई०)–**गुलाम वंश को ममूलक वंश के नाम से भी जाना जाता है। इस वंश के अन्य शासक थे–इल्तुतमिश, रजिया सुल्तान, नासिरुद्दीन महमूद एवं ग्यासुद्दीन बलबन।

कुतुबुद्दीन ऐबक–कुतुबुद्दीन ऐबक को अधिक समय तक शासन करने का अवसर नहीं मिला। लाहौर में चौगान (आधुनिक पोलो खेल) खेलते समय 1210 ई० में घोड़े से गिर जाने से उसकी मृत्यु हो गई। उसने अपने छोटे-से शासनकाल में अपने राज्य को सुदृढ़ करने का प्रयत्न किया। वह एक निर्माता भी था। उसने दिल्ली के पास 'कुतुबुमीनार' का निर्माण कार्य आरंभ कराया, अजमेर में 'अढ़ाई दिन का झोंपड़ा' एवं दिल्ली में 'कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद' का निर्माण कराया।

इल्तुतमिश–इल्तुतमिश भी एक गुलाम था, जो 1210 ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्तराधिकारी बना। उसने 26 वर्षों तक शासन किया तथा अपनी नीति-कुशलता से अपने साम्राज्य को मंगोल आक्रांता चंगेज खाँ के क्रोध से बचाया।

इल्तुतमिश ने अपनी सरकार का संगठन किया तथा अनेक सुधार किए। उसने कुलीन वर्ग के चालीस सरदारों (चालीसा) का गठन किया। इल्तुतमिश ने अपने साम्राज्य को अनेक 'इक्ता' में बाँटा, जो सामंतों तथा अधिकारियों को वेतन के तौर पर दिए जाते थे। उसने चाँदी के सिक्कों (जिन्हें 'टका' कहा जाता था) तथा ताँबे के सिक्कों (जिन्हें 'जीतल' कहा जाता था) का प्रचलन सल्तनत की मुद्रा के रूप में किया। सन् 1236 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

इल्तुतमिश ने अपने पुत्र को नहीं, बल्कि अपनी पुत्री रजिया को अपना उत्तराधिकारी घोषित किया। रजिया एक योग्य शासिका थी। उसने चार वर्ष की अल्प अवधि तक (1236-1240 ई०) कुशलतापूर्वक शासन किया। उसे उसके विद्रोहियों ने मार डाला।

रजिया के उत्तराधिकारी अयोग्य तथा कमजोर शासक सिद्ध हुए, इसलिए 1246 ई० में तुर्क सरदारों ने नासिरुद्दीन महमूद को सुल्तान बनाया। नासिरुद्दीन महमूद ने 1266 ई० तक शासन किया, उसकी मृत्यु के बाद ग्यासुद्दीन बलबन दिल्ली का सुल्तान बना, बलबन इल्तुतमिश का एक विश्वस्त गुलाम था। अपनी योग्यता के कारण वह चालीस सरदारों में सम्मिलित होने में सफल हुआ। उसने अपने 20 वर्ष के शासन में 'रक्त एवं लौह' की नीति का पालन किया। 1286 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

2. **सांस्कृतिक दशा**–इब्नबतूता, अलबरूनी एवं जियाउद्दीन बरूनी के विवरण उस काल के इतिहास की जानकारी के महत्त्वपूर्ण साधन हैं।

प्रशासन–दिल्ली सल्तनत का शासक सुल्तान कहलाता था। वह शासन की धुरी होता था। सुल्तान बनने की प्रथा वंशानुगत थी। कभी-कभी सिंहासन हथियाने के लिए हिंसा और तलवार का सहारा भी लिया जाता था। सुल्तान साम्राज्य के संपूर्ण प्रशासन का संचालन करता था। वह इस कार्य में अपने विश्वासपात्र अधिकारियों का सहयोग भी लेता था। सुल्तान के बाद सरदार और उलेमा होते थे जो सुल्तान की निरंकुशता पर अंकुश रखते थे। ये लोग प्रशासन की नीतियों का भी निर्धारण करते थे।

सुल्तान की शासन व्यवस्था शरीयत के नियमों पर आधारित होती थी। उलेमा इस संबंध में सुझाव देते थे। धर्म और न्याय व्यवस्था में

उन्हें उच्च स्थान दिया था। शासन व्यवस्था में चार विभाग बड़े महत्त्वपूर्ण समझे जाते थे।

- **दीवाने विजारत–**इसका अध्यक्ष वजीर होता था तथा इस विभाग का कार्य सामान्य प्रशासन देखना था।
- **दीवाने अर्ज–**यह सेना से संबंधित व्यवस्थाएँ देखता था।
- **दीवाने इंशा–**यह राज्य पत्राचार की व्यवस्था देखता था।
- **दीवाने रिसालत–**यह विभाग धर्म संबंधी मामलों को देखता था।

प्रदेश का शासन प्रदेश के अध्यक्ष चलाते थे, इन्हें वली या मुक्ति कहा जाता था। वे अपने कार्यों के लिए केंद्रीय शासन के प्रति उत्तरदायी थे। प्रदेश शिक और परगना में बँटे थे। परगना में कई गाँव सम्मिलित होते थे। परगना का शासक आमिल कहलाता था। गाँव प्रशासन की सबसे छोटी इकाई गाँव थी। गाँव का मुखिया मुकद्दम कहलाता था।

3. रजिया सुल्तान इल्तुतमिश की पुत्री थी; रजिया अपने भाइयों की अपेक्षा अधिक योग्य एवं निपुण थी; अतः इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत किया। लेकिन इल्तुतमिश की मृत्यु के पश्चात् कुछ सामंतों ने उसके ज्येष्ठ पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज को गद्दी पर बिठा दिया। परंतु कुछ समय पश्चात् ही दिल्ली की जनता एवं कुछ सैन्य नेताओं के सहयोग से रजिया दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुई। रजिया एक योग्य शासिका थी। वह शक्तिशाली एवं व्यवहार-कुशल थी। उसने चार वर्ष की अल्प अवधि तक (1236-1240 ई०) कुशलतापूर्वक शासन किया। रजिया को उसके विद्रोहियों ने मार डाला और उसके संक्षिप्त शासन-काल का अंत कर दिया।
4. **इल्तुतमिश–**इल्तुतमिश भी एक गुलाम था, जो 1210 ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक का उत्तराधिकारी बना। उसे भारत में मुस्लिम शासन का वास्तविक संस्थापक या निर्माता माना जाता है। उसने 26 वर्षों तक शासन किया तथा अपनी नीति-कुशलता से अपने साम्राज्य को मंगोल आक्रांता चंगेज खाँ के क्रोध से बचाया। सन् 1229 ई० में बगदाद के खलीफा ने उसे 'हिंदुस्तान के सुल्तान' की उपाधि से विभूषित किया।

   इल्तुतमिश ने अपनी सरकार का संगठन किया तथा अनेक सुधार किए। उसने कुलीन वर्ग के चालीस सरदारों (चालीसा) का गठन

किया। उसने अपने साम्राज्य को अनेक 'इक्ता' में बाँटा, जो सामंतों तथा अधिकारियों को वेतन के तौर पर दिए जाते थे। उसने चाँदी के सिक्कों (जिन्हें 'टका' कहा जाता था) तथा ताँबे के सिक्कों (जिन्हें 'जीतल' कहा जाता था) का प्रचलन सल्तनत की मुद्रा के रूप में किया। उसने कुतुबमीनार का निर्माण कार्य भी पूरा कराया, जिसे कुतुबुद्दीन ऐबक ने प्रारम्भ किया था। सन् 1236 ई० में उसकी मृत्यु हो गई।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए–

(अ) कला एवं स्थापत्य–सल्तनत काल में जिस कला और वास्तुकला का विकास हुआ, उसे हिंदू एवं मुस्लिम वास्तुकला कहा गया। सुल्तानों ने भारतीय शिल्पियों को नई कलाकृतियाँ बनाने के लिए लगाया और उनसे नई-नई इमारतें बनवाई गईं। इस काल में दिल्ली में बनी कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद, अलाई दरवाजा कुतुबमीनार थीं। कुतुबमीनार सूफी संत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी को समर्पित थी। अलाउद्दीन खिलजी ने सीरी नाम से नई राजधानी बसाई। यह कुतुबमीनार से कुछ ही किलोमीटर की दूरी पर स्थित थी। कुतुबक्षेत्र में प्रवेश के लिए उसके द्वारा निर्माण करवाया गया दरवाजा 'अलाई दरवाजा' कहलाता है।

(ब) भाषा एवं साहित्य–सल्तनत काल में सरकारी कार्य फारसी भाषा में किया जाता था। विद्वान हिंदुओं की भाषा संस्कृत थी। अनेक प्रादेशिक भाषाएँ भी प्रचलन में थीं तथा अनेक संस्कृत ग्रंथों का अनुवाद प्रादेशिक भाषाओं में किया गया। उस समय उर्दू भाषा का विकास हो रहा था, जो हिंदी और फारसी भाषा का मिश्रित रूप थी। कालांतर में यही भाषा जन-सामान्य की भाषा बनी।

2. अलाउद्दीन खिलजी 1296 ई० में दिल्ली सल्तनत का शासक बना। उसने शक्तिशाली सेना के बल पर 1297 ई० में गुजरात तथा मालवा, 1301 ई० में रणथंभौर और 1303 ई० में मेवाड़ में चित्तौड़ के किले पर अधिकार जमा लिया। अलाउद्दीन खिलजी के कारण ही चित्तौड़ की महारानी पद्मिनी को जौहर करना पड़ा। (इसी विषय पर मलिक मोहम्मद जायसी ने पद्मावत की

रचना की।) राजस्थान के सभी शासक उसके अधीन थे। वे उसे खिराज के रूप में 'कर' प्रदान करते थे। अलाउद्दीन विश्व विजेता बनने की कामना रखता था और स्वयं को दूसरा सिकन्दर कहता था।

3. **सल्तनत काल–**कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा स्थापित दिल्ली सल्तनत तीन सौ वर्षों के अंदर ही समाप्त हो गई। इस दौरान इस पर पाँच अलग-अलग राजवंशों ने शासन किया। इस काल को ही सल्तनत काल कहते हैं।

4. तुगलक वंश की स्थापना ग्यासुद्दीन तुगलक ने की थी। सुल्तान बनने से पहले वह दीपालपुर का गवर्नर था। उसका वास्तविक नाम गाजी मलिक था। खिलजी वंश के शासक की हत्या कर वह दिल्ली का सुल्तान बना।

   ग्यासुद्दीन तुगलक अनुभवी तथा बहादुर योद्धा, योग्य राजनेता एवं कुशल प्रशासक था। उसने अलाउद्दीन के कठोर कानूनों का अंत कर दिया तथा जन-कल्याण के अनेक कार्य किए। उसने किलों, बागों तथा नहरों आदि का निर्माण कराया। उसी ने दिल्ली के पास तुगलकाबाद नामक नगर बसाया।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. लोदी वंश की स्थापना बहलोल लोदी ने की। लोदी वंश के शासकों ने सल्तनत को संगठित करने का प्रयास किया। सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी इस वंश के प्रमुख शासक थे।

2. सैयद वंश के संस्थापक खिज्र खाँ थे।

3. फिरोज तुगलक ने फिरोजपुर, फिरोजाबाद और हिसार-फिरोजा आदि नगर बसाए।

4. खिलजी वंश की स्थापना जलालुउद्दीन खिलजी ने 1290 में की थी।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) कुतुबुद्दीन ऐबक   2. (i) जलालुद्दीन खिलजी ने
3. (iii) नासिरुद्दीन महमूद   4. (i) गुलाम वंश

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मुहम्मद तुगलक का वास्तविक नाम **जौना खाँ** था।
2. हिंदू धर्म के दो प्रमुख संप्रदाय **वैष्णव** एवं **शैव** थे।

3. **खिज्र खाँ** ने सैयद वंश की स्थापना की।
4. लोदी वंश का अंतिम शासक **इब्राहिम लोदी** था।
5. लोदी सुल्तानों के मकबरे **बागों** में बनाए गए।
6. सुल्तान की शासन व्यवस्था **शरीयत** के नियमों पर आधारित थी।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓) 6. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 अकबर से पहले का भारत

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **शेरशाह (1540-45)–**हुमायूँ को बंगाल के शासक शेरशाह सूरी से सबसे बड़ा मुकाबला करना पड़ा। उसने हुमायूँ को 1540 ई० में चौसा और कन्नौज के युद्धों में परास्त किया। शेरशाह सूरी के कारण हुमायूँ को भारत छोड़कर भागना पड़ा और उसे पंद्रह वर्ष भारत के बाहर रहकर वनवास भोगना पड़ा। शेरशाह सूरी ने सूरी वंश की स्थापना की। शेरशाह सूरी ने उत्तरी भारत पर बहुत थोड़े समय तक शासन किया। उसकी गणना भारत के इतिहास में मध्यकाल के श्रेष्ठतम शासक के रूप में की जाती है। शेरशाह सूरी का शासन-प्रबंध उच्चकोटि का था। बाद में अकबर ने भी उसी का अनुपालन किया। उसने न्याय व्यवस्था और मुद्रा के क्षेत्र में समानता लागू की। उसके काल के चाँदी के सिक्के रुपि कहलाते थे। उसने लोगों के लिए सराएँ बनवाईं, कुएँ खुदवाए, छायादार वृक्ष लगवाए। उसके द्वारा सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य ग्रांड ट्रंक रोड का पुनः निर्माण था, जो मौर्यकाल में बनवाई गई थीं। बिहार में सासाराम में उसने अपने लिए मकबरा बनवाया और दिल्ली में शेरगढ़ तथा पंजाब में रोहतक नाम के नए नगर बसाए। अतः शेरशाह सूरी एक योग्य शासक था।

2. **बाबर (1526 ई०-1530 ई०)–**जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर ने जब

1494 ई० में फरगाना राज्य का उत्तराधिकार प्राप्त किया। उस समय उसकी आयु केवल 12 वर्ष थी। मंगोलों की दूसरी शाखा, उजबेगों के आक्रमण के कारण उसे अपनी पैतृक गद्दी छोड़नी पड़ी। अनेक वर्षों तक भटकने के बाद उसने 1504 ई० में काबुल पर कब्जा कर लिया। उसने 1526 ई० में दिल्ली के साथ-साथ आगरा पर भी अधिकार कर लिया और भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की तथा आगरा को अपनी राजधानी बनाया।

इब्राहिम लोदी को हराने के बाद बाबर ने जैसे ही भारत का सिंहासन सँभाला, उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अफगान सरदार तथा राणा साँगा इस विचार में थे कि बाबर लूट का धन लेकर अपने देश वापस लौट जाएगा। वे यह भी सोचते थे कि बाबर की सहायता से उन्हें दिल्ली और आगरा प्राप्त होगा।

बाबर ने दिल्ली पर अपना राज्य सुदृढ़ करने के लिए मेवाड़ के शासक राणा साँगा को 1527 ई० में आगरा के निकट के एक गाँव खानवा के युद्ध में पराजित किया। इसके पश्चात् 1528 ई० में बाबर ने चंदेरी के शासक मेदिनीराय को चंदेरी के युद्ध में हराया। 1529 ई० में बाबर ने बंगाल और बिहार में अफगान प्रमुखों को घाघरा नदी के किनारे पर हराया। बाबर का साम्राज्य अब पश्चिम में ऑक्सस नदी (अफगानिस्तान) से लेकर पूर्व में बिहार तक फैल गया। परंतु वह इसके बाद अधिक समय तक जीवित न रह सका। 1530 ई० में लाहौरी में उसकी मृत्यु हो गई।

3. **कृष्णदेव राय–**कृष्णदेव राय ने रायचूर दोआब पर ही विजय नहीं पाई, बल्कि वह अपनी सेनाएँ लेकर बहमनी राज्य के अंदर तक प्रवेश कर गया। उसने उड़ीसा पर आक्रमण किया और वहाँ के राजा को भी पराजित किया। उसने पश्चिमी तट पर स्थित सभी स्थानीय राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखे, क्योंकि ये व्यापार के प्रमुख केंद्र थे और वह चाहता था कि व्यापारी विजयनगर से भी व्यापार करें, जिससे विजयनगर की आय में वृद्धि हो।

   उसने मंदिरों के निर्माण और उनकी मरम्मत पर भी विशेष ध्यान दिया। कृष्णदेव राय संस्कृत और तेलुगू का अच्छा ज्ञाता था और उसने तेलुगू में एक लंबे काव्य 'अमुक्त माल्यदा' की रचना की, जिसमें

उसने बताया कि राजा को किस प्रकार शासन करना चाहिए।

4. **यूरोप में पुनर्जागरण–**यूरोप में एक लंबे अंधकार युग के बाद पंद्रहवीं शताब्दी में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ। इसे पुनर्जागरण (रिनेसाँ) कहा जाता है। इस आंदोलन में लोगों के मन में यूरोप की प्राचीन सभ्यता और संस्कृति के प्रति फिर से रुचि उत्पन्न हुई। लोगों का ध्यान ईसाई धर्म के आरंभ होने से पूर्व की यूनान और रोमन की सभ्यताओं तथा संस्कृतियों की ओर गया। इन सभ्यताओं के इतिहास, दर्शन, साहित्य और कलात्मक उपलब्धियों का ध्यानपूर्वक अध्ययन किया गया। इटली के छोटे-छोटे राज्यों के शासक ही नहीं, बल्कि धनी व्यापारी भी इस ज्ञान में रुचि लेने लगे।

   पंद्रहवीं शताब्दी में पोलैंड के नए दार्शनिक कोपरनिकस ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि सूर्य ब्रह्मांड का केंद्र है और पृथ्वी तथा अन्य ग्रह इसके चारों ओर चक्कर लगाते हैं। उसका यह सिद्धांत अधार्मिक समझा गया, किंतु अभी तक चर्च का कहना था कि पृथ्वी ही ब्रह्मांड का केंद्र है, क्योंकि पृथ्वी को ईश्वर ने बनाया है।

   सत्रहवीं शताब्दी के आरंभ में इटली के वैज्ञानिक गैलीलियो ने भी इसी तथ्य को सिद्ध किया। उसने दूरबीन से सूर्य और अन्य ग्रहों को देखा फिर अपने इस निष्कर्ष पर पहुँचा। वह चर्च के ज्ञान को असत्य घोषित करके उसको चुनौती दे रहा था। इससे चर्च के साथ उसका संघर्ष भी हुआ।

   ये आंदोलन इटली के नगरों से आरंभ हुए और धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों, विशेष रूप से फ्रांस, हॉलैंड, बेल्जियम और इंग्लैंड के नगरों में फैल गए। यह विचारधारा व्यापारियों में बहुत लोकप्रिय हुई, क्योंकि व्यापारी नहीं चाहते थे कि चर्च बहुत शक्तिशाली बने। इस विचारधारा ने सामंतशाही पर भी कुठाराघात किया।

5. **अमेरिका की खोज–**अब तक यूरोपवासियों को अमेरिका के विषय में जानकारी नहीं थी। वे केवल यही जानते थे कि यूरोप, एशिया और अफ्रीका ही विश्व के भाग हैं। स्पेनवासी भारत के लिए एक नए समुद्री मार्ग की खोज में थे। प्रसिद्ध यात्री क्रिस्टोफर कोलंबस के नेतृत्व में एक सामुद्रिक अभियान के व्यय को स्पेन के बादशाह ने वहन किया। कोलंबस ने सोचा कि वह स्पेन से पश्चिम की दिशा में समुद्र को पार

करेगा तो वह भारत पहुँच जाएगा। उस समय लोगों को यह विश्वास हो गया था कि पृथ्वी गोल है परंतु वह यह नहीं जानते थे कि बीच में अमेरिका के महाद्वीप हैं। इसलिए उसने पश्चिम की ओर यात्रा की और काफी कठिनाइयों के बावजूद वह वेस्ट इंडीज के द्वीपों तक जा पहुँचा। उसने सोचा कि वह भारत पहुँच गया है इसलिए उसने इन द्वीपों को वेस्ट इंडीज कहा तथा वहाँ के निवासियों को रैड इंडियंस का नाम दिया, जो जंगली जीवन व्यतीत करते थे। यह घटना सन् 1492 ई० में हुई। सन् 1497 ई० में अमेरिगो वेस्पूकी ने भी अमेरिका की यात्रा की। इस नए महाद्वीप का नाम अमेरिगो वेस्पूकी के नाम पर अमरीका (अमेरिका) हुआ। बाद में सन् 1519 ई० में जब मैगेलन ने संसार के चारों ओर समुद्र यात्रा की तो अमेरिकी महाद्वीप का अस्तित्व सिद्ध हो गया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **हुमायूँ की असफलता के कारण–**हुमायूँ की असफलता के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे–

(i) हुमायूँ के भाई उसके विरुद्ध थे और उन्होंने मुसीबत में भी उसका साथ नहीं दिया।

(ii) हुमायूँ के खजाने युद्धों के कारण खाली हो गए तथा जनता असंतुष्ट हो गई।

(iii) हुमायूँ सैन्य रणनीति व राजनीति का कुशल जानकार न था।

(iv) वह बहादुरशाह और शेरशाह सूरी की शक्ति का सही अंदाजा नहीं लगा सका।

2. पानीपत का प्रथम युद्ध 1526 ई० में जहीर-उद्-दीन मुहम्मद बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य हुआ, जिसमें बाबर की विजय हुई।

3. बहमनी साम्राज्य का संस्थापक अलाउद्दीन हसन था। वह हसन गंगू के नाम से भी विख्यात था। उसका नाम उसके गुरु 'गांगू' के नाम पर पड़ा जोकि एक ब्राह्मण था। बाद में बहमनी राज्य तीन राज्यों में विभक्त हो गया–अहमदनगर, गोलकुंडा और बीजापुर।

4. नवीन ईसाई दल के लोग ये वे लोग थे जो रोमन कैथोलिक चर्च का विरोध करते थे। यह आंदोलन धार्मिक सुधार आंदोलन कहलाया। हॉलैंड, इंग्लैंड, नार्वे और स्वीडन जैसे उत्तरी यूरोप के देशों ने प्रोटैस्टेंट धर्म को अपना लिया।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. यूरोप में एक लंबे अंधकार युग के बाद पंद्रहवी शताब्दी में एक नया आंदोलन आरंभ हुआ, जिसे पुनर्जागरण (रिनेसाँ) कहा जाता है।

2. भारत में पहुँचने वाला प्रथम यूरोपीय वास्कोडिगामा था।

3. शेरशाह सूरी, सूरी वंश का संस्थापक था।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) 1526 ई० में 2. (i) मानचित्र 3. (iii) 1377 ई० में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. बाबर की मृत्यु के बाद उसका बड़ा बेटा **हुमायूँ** दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

2. हुमायूँ **रणनीति** व **राजनीति** का कुशल जानकार न था।

3. कंधार और काबुल अब **अफगानिस्तान** में हैं।

4. पुर्तगाली व्यापार करने के लिए **भारत** आए थे।

5. कृष्णदेव राय **रायचूर दोआब का** एक प्रसिद्ध शासक था।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 अकबर का युग और उत्तरवर्ती मुगल

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **अकबर–**हुमायूँ की मृत्यु के समय अकबर की आयु मात्र तेरह वर्ष थी। वह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर के नाम से शासक बना। उसके पिता का विश्वासपात्र मित्र बैरम खाँ उसका संरक्षक था। बैरम खाँ ही अकबर की ओर से शासन प्रबंध चलाता था। अकबर जिस सिंहासन पर आरूढ़ हुआ 'वह फूलों की शय्या न होकर काँटों का ताज था।' उसके साम्राज्य के चारों ओर शत्रुओं का भारी जमावड़ा था। पंजाब में सिकंदर सूरी बड़ा शक्तिशाली शासक था।

अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था–अकबर ने अपने साम्राज्य में एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था की नींव डाली जिसका सर्वेसर्वा वह स्वयं था। उसने साम्राज्य को विभिन्न स्तरों पर बाँट दिया और प्रत्येक स्तर पर जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति कर दी। अकबर के द्वारा बनाया गया प्रशासनिक ढाँचा निम्नलिखित प्रकार से था–

साम्राज्य के अंग	जिम्मेदारी	कार्य
(क) केंद्र	बादशाह	सेना, प्रशासन व न्याय
	दीवान	वित्तीय नियंत्रण
(ख) प्रांत	सूबेदार	कानून, फौजदारी
	प्रांतीय दीवान	राजस्व वसूली, आय-व्यय विवरण
	कोतवाल	नगर का प्रशासन
(ग) परगना	शिकदार	कानून एवं व्यवस्था
	आमिल	राजस्व वसूली
	कानूनगो	उपज एवं राजस्व का वितरण
	फौजदार	कोष की व्यवस्था
(घ) गाँव	मुकद्दम (प्रधान)	कानून एवं व्यवस्था
	पटवारी	राजस्व का विवरण
	चौकीदार	सुरक्षा का दायित्व

अकबर की मनसबदारी व्यवस्था–अकबर ने एक नई व्यवस्था मनसबदारी व्यवस्था को प्रचलित किया। प्रत्येक अधिकारी और सामंत को मनसब दिया जाता था, जिसे मनसबदार कहा जाता था। प्रत्येक मनसबदार राजा को सेना भेजता था। सबसे छोटा मनसबदार दस घोड़ों का मालिक होता था। सबसे ऊँचा मनसबदार 10,000 सिपाहियों का सरदार होता था। मनसबदार का पद पैतृक नहीं था। मनसबदारों का एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में तबादला किया जा सकता था और उन्हें निश्चित वेतन मिलता था। कुछ मनसबदारों को जागीर के रूप में भुगतान होता था। मनसबदारों को अपने पद के अनुसार सेना की देखभाल करनी होती थी। मुगल प्रशासन बहुत कुछ फौजी शासन व्यवस्था पर आधारित था। अकबर की सेना में तोप चलाने वाले सैनिक, घुड़सवार, पैदल सिपाही और नौसेना थी तथा अन्य भागों में

साम्राज्य का विस्तार भी इनके कामों में शामिल थे, किंतु ये कार्य बादशाह के आदेश से ही करते थे। बदले में इन्हें ऊँचा वेतन मिलता था। इतिहासकारों का कहना है कि इस समय मुगल अमीर या मनसबदारों को जितना वेतन मिलता था उतना दुनिया के किसी भी अन्य राज्य के अधिकारियों को नहीं मिलता था। अतः वे बड़ी शान-शौकत से रहते थे।

2. **शाहजहाँ–**शाहजहाँ जिसका बचपन का नाम खुर्रम था, जहाँगीर और राजा उदयसिंह की पुत्री जगत गोसाईं का पुत्र था। उसका विवाह आसफ खाँ की पुत्री अरजुमंद बानो बेगम से हुआ था, जिसे शाहजहाँ ने 'मल्लिका ए जमानी' की उपाधि दी थी और उसे वह प्यार से 'मुमताज' कहता था। जहाँगीर के बादशाह रहते उसने कई बार विद्रोह किया किंतु हर बार वह पराजित हुआ। लेकिन जहाँगीर की मृत्यु (1627) के बाद 1628 ई० में वह भारत का 'बादशाह' बना और आगरा के सिंहासन पर बैठा तथा 'अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद सहित किरन-ए-सानी' की उपाधि धारण की। उसने अपने श्वसुर और विश्वास पात्र आसफ खाँ को साम्राज्य का वजीर नियुक्त किया तथा महावत खाँ को 'खानखाना' की उपाधि देकर 7000 का मनसब प्रदान किया। शाहजहाँ का काल सर्वाधिक शांति, विकास और वैभव का काल था। अतः इसे मध्यकाल का स्वर्गयुग कहा जाता था।

औरंगजेब–औरंगजेब अपने पिता को बंदी बनाकर व अपने भाई के विद्रोहों का दमन करने के बाद 1669 ई० में गद्दी पर बैठा था। उसका शासन काल 1669 से 1707 ई० तक था। उसने अपने शासनकाल के समय में विभिन्न संघर्ष किए व विद्रोहों का दमन किया। उसने 'मोइउद्दीन मुहम्मद आलमगिरि' की उपाधि ग्रहण की थी। औरंगजेब ने अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसके शासन काल में मुगल साम्राज्य उत्तर भारत में काबुल व कश्मीर, बंगाल तथा बिहार तक व पश्चिम में गुजरात तथा दक्षिण के बीजापुर तक विस्तारित किया था।

उसने अनेक समस्याओं का सामना किया था। उसके समय में अधिकारियों की संख्या अधिक थी, जिसके कारण राज्यकोष को भी वेतन देने के लिए दिक्कत होती थी। अतः उसने अकबर के समय में हटाए गए करों को पुनः घोषित कर दिया। हिंदू तीर्थयात्रियों को पुनः

मैसूल कर देना पड़ा व जजिया कर भी फिर से लगा दिया गया।

3. **मुगल साम्राज्य का पतन–**औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात् मुगल साम्राज्य का तेजी से पतन हुआ। मुगल दरबार सरदारों के बीच आपसी झगड़ों और षड्यंत्रों का केंद्र बन गया तथा शीघ्र ही महत्त्वाकांक्षी प्रांतीय शासक स्वतंत्रता से कार्य करने लगे। साम्राज्य की कमजोरी उस समय प्रकट हो गई जब 1739 ई० में नादिरशाह ने मुगल सम्राट को बंदी बना लिया तथा दिल्ली को खुलेआम लूटा। इस काल में मुगल सरदारों की विलासिता बढ़ गई। प्रशासनिक स्तर पर व्यापक असंतोष और भेदभाव फैला। अधिकतर जागीरदारों का यह प्रयास रहता था कि वे अधिक आमदनी वाली जागीर हथिया लें और इस कारण मुगल प्रशासन व्यवस्था में भ्रष्टाचार बढ़ता गया।
   सरदार स्वतंत्रता की कामना करने लगे। योग्य सम्राटों के अभाव में वजीरों, सरदारों और मनसबदारों ने उनका स्थान लेने की चेष्टा की जोकि मुगल साम्राज्य के पतन का एक कारण बना।
   राजनीतिक क्षेत्र में औरंगजेब ने अपनी गलत नीतियों के कारण मराठों और राजपूतों को अपना शत्रु बना लिया। औरंगजेब की मृत्यु तक मुगल राज्य दक्षिण तक फैल चुका था और औरंगजेब ने अपने जीवन के लगभग अंतिम 25 वर्ष दक्षिण में बिताए। इतने विशाल साम्राज्य को संगठित रखना सरल कार्य नहीं था। मुगल साम्राज्य के पतन का कारण भारत की राजनीति में यूरोपियों का हस्तक्षेप भी था। उन्होंने धीरे-धीरे भारतीय राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना आरंभ कर दिया था और अंत में वे भारत के शासक बन गए।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था–**अकबर ने अपने साम्राज्य में एक केंद्रीकृत शासन व्यवस्था की नींव डाली, जिसका सर्वेसर्वा वह स्वयं था। उसने साम्राज्य को विभिन्न स्तरों पर बाँट दिया और प्रत्येक स्तर पर जिम्मेदार अधिकारियों की नियुक्ति कर दी थी।

2. **धार्मिक नीतियाँ–**अकबर एक उदार हृदय का राजा था। वह सभी धर्मों का समान आदर करता था। हिंदुओं का विश्वास प्राप्त करने के लिए उसने सहनशीलता एवं आपसी समन्वयता की नीति को अपनाया।
   लोगों को अपनी पसंद के अनुसार आराधना करने की पूर्ण स्वतंत्रता

थी। हिंदुओं को अपने तीर्थस्थानों पर जाने हेतु कर का भुगतान करना होता था, जिसे जजिया कर कहते थे। अकबर ने 1562 ई० में तीर्थ स्थल एवं 1564 ई० में जजिया कर समाप्त कर दिया। उसने अनेक मंदिरों को बनाने के लिए अनुमति एवं प्रोत्साहन दिया। अकबर हिंदू त्योहारों; जैसे–होली, दीवाली आदि में भी भाग लेता था।

3. शाहजहाँ का काल सर्वाधिक शांति, विकास और वैभव का काल था। अतः इसे मध्यकाल का स्वर्णयुग कहा जाता था।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. औरंगजेब 1669 ई० में गद्दी पर बैठा था। औरंगजेब एक अदूरदर्शी और कट्टरपंथी शासक था।

2. उत्तराधिकार के युद्ध में औरंगजेब की विजय हुई, क्योंकि औरंगजेब बहुत ही धूर्त और क्रूर राजा था।

3. क्योंकि औरंगजेब ने गुरुद्वारे को तुड़वाने और सिक्खों को नगरों से निकालने के आदेश दे दिए थे। इसलिए औरंगजेब का सिक्खों के साथ युद्ध हुआ।

4. शाहजहाँ ने आगरा में ताजमहल और दिल्ली में लालकिले का निर्माण कराया।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) पादशाह बेगम 2. (ii) ताजमहल

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. अकबर के संरक्षक **बैरम खाँ** थे।

2. मनसबदार का पद **पैतृक** नहीं था।

3. शाहजहाँ को **खुर्रम** कहा जाता है।

4. सिक्कों पर भी **नूरजहाँ** का नाम अंकित था।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 धार्मिक विचार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **भक्ति आंदोलन–**मध्यकालीन भारत का एक महान सामाजिक, धार्मिक आंदोलन भक्ति आंदोलन था। भक्ति का आशय बिना किसी विशेष अनुष्ठान किए ईश्वर की पूजा करना है। ईश्वर के साकार अथवा निराकार स्वरूप के कारण भक्ति में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। निर्गुण भक्ति के मानने वाले मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं करते, जबकि सगुण भक्ति में अनेक देवी-देवताओं की पूजा की जाती है। निर्गुण भक्ति के उपासकों का मानना है कि मानव हृदय में ईश्वर का निवास होता है और वह (ईश्वर) प्रत्येक स्थान पर विद्‌यमान है। उपनिषदों के अद्‌वैत दर्शन में दोनों मत विश्वास करते हैं। भक्त संतों ने गुरु से सच्चे ज्ञान की प्राप्ति को मोक्ष प्राप्त करने का मार्ग बताया।

दक्षिण भारत के अलवार एवं नयनार संतों से भक्ति आंदोलन का इतिहास आरंभ होता है। 10 अलवार एवं 53 नयनार संतों द्‌वारा यह आंदोलन तमिल प्रदेश में आरंभ किया गया था। कालांतर में यह दक्षिण भारत के अन्य क्षेत्रों में भी फैल गया। इस आंदोलन को 15वीं शताब्दी में उत्तरी भारत में लोकप्रियता प्राप्त हुई।

भक्ति आंदोलन मुख्य रूप से आराध्य और उपासक के मध्य प्रेम संबंधों पर आधारित था। भक्त संत अधिकतर ब्राह्मण जाति से बाहर के थे। इन संतों ने बलि प्रथा एवं कर्मकांडों का विरोध किया तथा मन एवं हृदय की पवित्रता और सभी जीवों के प्रति दया एवं प्रेम पर जोर दिया। जाति, लिंग तथा धर्म के आधार पर प्रचलित भेदभाव को उन्होंने नकार दिया एवं उस समय की जनप्रिय भाषा में अपने उपदेश दिए। इन सभी कारणों से भक्ति आंदोलन ने जन आंदोलन का रूप ले लिया।

2. **इस्लाम धर्म–**इस धर्म के संस्थापक पैगंबर मुहम्मद थे, जो अरब के निवासी थे। यह मुसलमानों का धर्म है। ईसाई एवं यहूदी धर्म के

समान इस्लाम धर्म भी एक ही ईश्वर को मानता है जिसे अल्लाह के नाम से पुकारते हैं। ईसाई, यहूदी तथा इस्लाम धर्म में अनेक समानताएँ विद्यमान हैं।

मुस्लिम मतावलंबियों के अनुसार पैंगंबर मुहम्मद साहब अंतिम और महानतम पैगंबर थे। मक्का नामक पवित्र नगर में 570 ई० में उनका जन्म हुआ था। पैगंबर मुहम्मद साहब ने कुरान के संदेश का सभी स्थानों पर प्रचार किया। उनका मत था कि अल्लाह की इच्छा के आगे सच्चे मुसलमान को नतमस्तक हो जाना चाहिए। अन्याय एवं अनैतिकता का उन्होंने विरोध किया। पैगंबर मुहम्मद साहब ने इस्लाम धर्म के अनुयायियों को बताया कि कयामत के दिन अल्लाह उन्हें कर्मों के अनुसार जन्नत (स्वर्ग) तथा दोजख (नर्क) प्रदान करेंगे।

इस्लाम धर्म की शिक्षाएँ–मुहम्मद साहब की शिक्षाओं का संग्रह हदीस में किया गया है। इस्लाम धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित थीं–

(i) अल्लाह एक, निराकार और सर्वशक्तिमान है। अतः सभी को अल्लाह में विश्वास रखना चाहिए।

(ii) इस्लाम धर्म के लोगों को छोटे-बड़े का भेदभाव न करके सबके साथ समानता का व्यवहार करना चाहिए।

(iii) मूर्तिपूजा वर्जित है। मूर्तिपूजा नहीं करनी चाहिए।

(iv) इस्लाम धर्म में धार्मिक कर्मकांडों के लिए कोई स्थान नहीं है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **गुरु नानक देव–**बाबा गुरु नानक (1469-1539) का जन्म तलवंडी (पाकिस्तान में ननकाना साहब) में हुआ था। उन्होंने करतारपुर (रावी नदी के किनारे डेरा बाबा नानक) में एक केंद्र स्थापित करने से पहले कई यात्राएँ कीं। उन्होंने करतारपुर में एक नियमित उपासना आरम्भ की, जिसमें उन्हीं के शब्दों (भजनों) को गाया जाता था। उनके अनुयायी बिना किसी धर्म, जाति एवं लिंग के भेदभाव को मानते हुए एक साझी रसोई में एक साथ भोजन करते थे। इसे लंगर कहा जाता था। बाबा गुरु नानक ने उपासना और धार्मिक कार्यों के लिए जो जगह निश्चित की, उसे धर्मशाला कहा जाता था। आज इसे 'गुरुद्वारा' कहते हैं।

2. कुरान के अनुसार पाँच धर्म सिद्धांत अग्रलिखित हैं–

(i) **कल्मा–**अल्लाह के अतिरिक्त कोई ईश्वर नहीं है। मुहम्मद साहब अल्लाह के पैगंबर हैं।

(ii) **नमाज–**प्रत्येक मुसलमान को दिन में पाँच बार नमाज पढ़नी चाहिए।

(iii) **जकात–**इस्लाम धर्म के अनुयायियों को निर्धन लोगों को दान देना चाहिए।

(iv) **रोजा–**रमजान के पवित्र माह में उन्हें दिन निकलने से दिन छिपने तक रोजा (व्रत) रखना चाहिए।

(v) **हज–**जीवन में एक बार हज करने के लिए मक्का अवश्य जाना चाहिए।

3. पैगंबर मुहम्मद साहब इस्लाम धर्म के संस्थापक थे, जो अरब के निवासी थे। यह मुसलमानों का धर्म है। पैगंबर मुहम्मद साहब अंतिम और महानतम पैगंबर थे।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. इस्लाम धर्म के संस्थापक मुहम्मद पैगंबर थे।

2. भक्ति से आशय बिना किसी विशेष अनुष्ठान किए ईश्वर की पूजा करना है।

3. सल्तनत काल में बड़ी संख्या में मुस्लिम संत भारत आए और उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में बस गए। यही संत बाद में सूफी संत कहलाए।

4. सिक्खों के पवित्र स्थल का नाम गुरुद्वारा है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) तलवंडी

2. (i) श्रीकृष्ण के

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. सिक्ख धर्म में **गुरु** की प्रधानता होती है।

2. पैगंबर मुहम्मद साहब ने **कुरान** के संदेश का सब स्थानों पर प्रचार किया।

3. **मीराबाई** बचपन से ही श्रीकृष्ण की भक्त थीं।

4. कबीर **निर्गुण** शाखा के संत थे।

III. सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

1.	मध्यकाल में	(i) 12 सिलसिले बने।
2.	श्री चैतन्य	(ii) भी निर्गुण भक्ति के ही उपासक थे।
3.	गुरु नानक	(iii) सिक्खों का पवित्र ग्रंथ है।
4.	गुरु ग्रंथ साहब	(iv) बंगाल के महान संत माने जाते हैं।
5.	सूफी आंदोलन में	(v) दो मुख्य धर्मों का उदय हुआ।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

इकाई-2 : हमारा पर्यावरण

1 पर्यावरण के घटक

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **पर्यावरण का संरक्षण–**हमारे जीवन के लिए पर्यावरण बहुत आवश्यक है। अतः यह हमें साँस लेने के लिए ऑक्सीजन, पीने के लिए पानी, खाने के लिए भोजन, पहनने के लिए वस्त्र तथा रहने के लिए भूमि प्रदान करता है। इनके अतिरिक्त पर्यावरण से हमें विभिन्न प्राकृतिक संसाधन; जैसे–पौधे, लकड़ी, ईंधन, खनिज तथा ऊर्जा की प्राप्ति होती है। हमारी सभी औद्योगिक गतिविधियाँ कच्चे माल पर निर्भर होती हैं, जिन्हें हम प्राकृतिक संसाधन द्वारा प्राप्त करते हैं।
लेकिन हमें पर्यावरण को अनावश्यक रूप से नष्ट नहीं करना चाहिए क्योंकि इन वस्तुओं के बिना हमारा जीवन असंभव है। वनों, चरागाहों, खेतों एवं खनिजों का अविवेकपूर्ण अत्यधिक उपयोग हमने नियंत्रित नहीं किया तो आगे चलकर हमारी आने वाली पीढ़ियों को भारी हानि उठानी पड़ेगी। अतः हमें प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना होगा। तभी हमारा पर्यावरण सुरक्षित रह सकेगा।

2. **पृथ्वी : अनोखा ग्रह–**पृथ्वी को सौरमंडल का अनोखा ग्रह कहने के निम्नलिखित कारण हैं–
   (i) सौरमंडल का पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है।
   (ii) सूर्य से पृथ्वी की समुचित दूरी जैव-विकास के योग्य है। यहाँ पर सूर्य की गर्मी जीव-जंतुओं को सहन करने योग्य प्राप्त होती है।

(iii) पृथ्वी पर सभी जीव-जंतुओं की संपूर्ण आवश्यकताएँ पूरी होती हैं।

(iv) वायुमंडल आवश्यकतानुसार ऑक्सीजन से युक्त है, जिसके कारण जनजीवन को कोई कठिनाई नहीं होती है।

(v) वायुमंडल अत्यधिक शीत एवं उष्णता को नियंत्रित किए हुए है।

(vi) जल जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण तत्त्व है जो कि पृथ्वी पर भरपूर मात्रा में पाया जाता है।

अतः इस प्रकार की विशेषताओं के कारण ही पृथ्वी को सौरमंडल का अनोखा ग्रह कहते हैं।

3. **पर्यावरण के प्रमुख परिमंडल–**पर्यावरण के निम्नलिखित चार प्रमुख परिमंडल हैं–

(i) वायुमंडल (ii) स्थलमंडल

(iii) जलमंडल (iv) जैवमंडल।

(i) **वायुमंडल–**वायु का वह घेरा जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है, वायुमंडल कहलाता है। यह विभिन्न गैसों का मिश्रण है। वायुमंडल में प्रमुख रूप से नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, ऑर्गन तथा कार्बन डाइ-ऑक्साइड आदि गैसें पाई जाती हैं। इनके अतिरिक्त वायुमंडल में जलवाष्प, धूल-कण आदि प्रमुख रूप से पाए जाते हैं। वायुमंडल पृथ्वी से लगभग 1,600 किमी की ऊँचाई तक ही पाया जाता है। वायुमंडल में नाइट्रोजन 78%, ऑक्सीजन 21%, ऑर्गन 0.9% तथा कार्बन डाइ-ऑक्साइड 0.33% पाई जाती है।

(ii) **स्थलमंडल–**पर्यावरण का दूसरा परिमंडल है–स्थलमंडल। यह पृथ्वी की वह परत है जो शैल पदार्थों से निर्मित है। यह महाद्वीपों पर तथा महासागरीय बेसिनों के नीचे विस्तृत है। इस परत की औसत मोटाई लगभग 100 किमी है। यह महाद्वीपीय भाग में अधिक मोटी, किंतु महासागरों के नीचे पतली है। यह शैलों से निर्मित है, जिसमें सिलिका, ऐल्युमीनियम, मैग्नीशियम, लोहे आदि अनेक खनिजों की प्रधानता मिलती है। स्थलमंडल की सबसे ऊपरी या बाहरी परत को भूपटल कहते हैं। इसका निर्माण अनेक प्रकार की शैलों से हुआ है।

(iii) **जलमंडल–**यह पृथ्वी का वह भाग है जो जल द्वारा घिरा हुआ है। इसमें महासागर, सागर, नदियाँ तथा झीलें आती हैं।

(iv) **जैवमंडल–**यह पृथ्वी का बहुत ही सँकरा परिमंडल है, जहाँ जीवन पाया जाता है। इस परिमंडल में स्थलमंडल जलमंडल तथा वायुमंडल के भाग सम्मिलित हैं। अधिकांश जीवित प्राणी चाहे वे जीव-जंतु हैं या पेड़-पौधे, पृथ्वी पर स्थल या जल की सतह पर पाए जाते हैं जो वायु से घिरी रहती है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **स्थलमंडल–**पर्यावरण का दूसरा परिमंडल है–स्थलमंडल। यह पृथ्वी की वह परत है जो शैल पदार्थों से निर्मित है। यह महाद्वीपों पर तथा महासागरीय बेसिनों के नीचे विस्तृत है। इस परत की औसत मोटाई लगभग 100 किमी है। यह महाद्वीपीय भाग में अधिक मोटी, किंतु महासागरों के नीचे पतली है तथा शैलों से निर्मित है, जिसमें सिलिका, ऐल्युमीनियम, मैग्नीशियम, लोहे आदि अनेक खनिजों की प्रधानता मिलती है। स्थलमंडल की सबसे ऊपरी या बाहरी परत को भूपटल कहते हैं। अतः इसका निर्माण अनेक प्रकार की शैलों से हुआ है।

2. जैवमंडल का शाब्दिक अर्थ है–''जीवों द्वारा बनाया गया मंडल''। इसी परिमंडल में स्थलमंडल, जलमंडल तथा वायुमंडल तीनों सम्मिलित हैं।''

3. पृथ्वी की सतह का लगभग दो तिहाई से भी अधिक भाग (70% से अधिक) जल से ढका है। अतः यही कारण है कि पृथ्वी को जलीय ग्रह कहा जाता है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है, 'परि' तथा 'आवरण' परि का शाब्दिक अर्थ होता है–चारों ओर से तथा 'आवरण' का अर्थ होता है–ढका हुआ अर्थात् चारों ओर से ढका हुआ। अतः हमारे चारों ओर से ढके हुए आवरण को पर्यावरण कहा जाता है।

2. वायु का वह घेरा जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है वायुमंडल कहलाता है।

3. जलमंडल पृथ्वी का वह भाग है जो जल द्वारा घिरा है। इसमें महासागर, सागर, नदियाँ तथा झीलें आती हैं।

4. पृथ्वी पर (71%) प्रतिशत जल पाया जाता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) मानव   2. (i) वायु

3. (iv) तीन चौथाई 4. (ii) चार

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मनुष्य पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण **अंग** है।
2. यह पृथ्वी का बहुत ही **बड़ा भाग** है।
3. वायुमंडल अत्यधिक **विशाल** तथा **तापमान** को नियंत्रित किए हुए है।
4. पर्यावरण स्थान-स्थान पर **अलग-अलग** होता है।
5. पृथ्वी को **जलीय ग्रह** कहा जाता है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 पृथ्वी का बदलता स्वरूप-प्रक्रिया

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **अनाच्छादन के वाहक–**अनाच्छादन के विभिन्न वाहक निम्नलिखित हैं–

(i) **बहता हुआ जल–**बहता हुआ जल या प्रवाही जल अनाच्छादन का सबसे प्रभावी कारक है। बहता हुआ जल या नदियाँ शैलों को शीघ्रता से तोड़ती हैं और उन्हें अपने साथ बहाकर ले जाती हैं। नदियाँ प्रायः पर्वतीय क्षेत्रों या पठारों से निकलती हैं। वे मैदानों से बहती हुई अंततः सागरों या महासागरों में गिरती हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में तेज ढलान के कारण नदियों की गति तेज होती है।

(ii) **नदियाँ–**नदियाँ जैसे-जैसे पहाड़ियों से नीचे की ओर बहती हैं, तब ये अन्य जलधाराओं या नदियों, जिन्हें 'सहायक नदियाँ' कहते हैं, से जुड़ जाती हैं। नदी और इसकी सहायक नदियाँ मिलकर एक नदी तंत्र बनाती हैं और वह स्थल क्षेत्र जो नदी और इसकी सहायक नदियों द्वारा बनाया जाता है 'नदी द्रोणी' कहलाता है।

(iii) **वर्षा का जल**–यह जल धरातल पर वर्षा होने पर शैलों के सूक्ष्म छिद्रों या दरारों से रिसकर भूमि के नीचे इकट्ठा हो जाता है। भूमिगत जल की प्राप्ति हमें कुओं, नल-कूपों, स्रोतों तथा पाताल-तोड़ कुओं के माध्यम से होती है। इसकी ऊपरी सतह को ही 'जल-स्तर' कहते हैं। जल स्तर की गहराई विभिन्न स्थानों पर भिन्न होती है।

(iv) **हिमानियाँ**–हिमनदी का निर्माण हिम रेखा के ऊपर हिम (बर्फ) के इकट्ठा होने पर होता है। हिम रेखा से आशय उस काल्पनिक रेखा से है, जिस पर हमेशा हिम जमी रहती है। हिमानी की निचली सीमा का निर्धारण हिम रेखा द्वारा ही होता है। हिमानियाँ मुख्यतः निम्न आक्षांशों में स्थित उच्च पर्वतीय क्षेत्रों और उच्च अक्षांशों पर पाई जाती हैं। यह सदैव बर्फ से ढकी रहती है, साथ ही यहाँ पर बर्फ की मोटी परतें बनती हैं।

2. मृदा संरक्षण के उपाय निम्नलिखित हैं–

(i) वनीकरण और वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत मृदा अपरदन क्षेत्रों में बड़ी संख्या में वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।

(ii) वृक्षों को अंधाधुंध काटने तथा चरागाहों में पशुओं की अधिक चराई की प्रवृत्ति पर नियंत्रण लगाने के कदम उठाए जाने चाहिए।

(iii) जल प्रवाह को नियंत्रित या नियमित करने के लिए ढलान वाली भूमि और तीव्र प्रवाहित नदियों पर तटबंध तथा अवरोध बनाए जाने चाहिए।

(iv) नदियों पर बाँध बनाकर बाढ़ को रोका जाना चाहिए।

3. **भारत की मृदा को निम्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है–**

(i) **रेगड़ या काली मृदा**–लावे के शैलों के टूटने से जो मृदा बनती है, उसे रेगड़ या काली मृदा कहते हैं। इसमें कपास की खेती की जाती है।

(ii) **जलोढ़ मृदा**–नदियों की गाद जमा होने से जिस चिकनी और उपजाऊ मृदा का निर्माण होता है, उसे जलोढ़ मृदा कहते हैं। इसमें चावल और जूट की खेती की जाती है।

(iii) **लाल मृदा**–जिस मृदा में लोहे के अंश अधिक पाए जाते हैं और

रंग लाल होता है, उसे लाल मृदा कहा जाता है। पानी पड़ते ही लोहे के कण लाल होकर इसे लाल रंग प्रदान करते हैं।

(iv) **लेटेराइट मृदा–**जिस मृदा का रंग ईंट की तरह होता है, उसे लेटेराइट मृदा कहते हैं। ऊँचे पठारी भागों में लेटेराइट मृदा पाई जाती हैं।

(v) **पर्वतीय मृदा–**हिमालय पर्वत के पर्वतीय भागों में बालू, कंकड़ तथा पत्थर युक्त जो मृदा मिलती है, उसे पर्वतीय मृदा कहा जाता है।

(vi) **मरुस्थलीय मृदा–**थार के मरुस्थल में जो बालूयुक्त अनुपजाऊ मृदा मिलती है, उसे मरुस्थलीय मृदा कहा जाता है। इस मृदा में नमी धारण करने की क्षमता बहुत कम होती है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **आंतरिक बल–**ये शक्तियाँ पृथ्वी की सतह के नीचे धरातल की ओर कार्य करती हैं; जैसे–भूकंप एवं ज्वालामुखी उद्‌गार।

बाह्य बल–ये शक्तियाँ पृथ्वी के धरातल के ऊपर पृथ्वी के स्थलरूपों में परिवर्तन करने के लिए निरंतर एवं धीमी गति से कार्य करती हैं; जैसे–बहता हुआ जल, प्रवाहित हिम, वायु एवं तरंगें। इन समस्त शक्तियों को संयुक्त रूप से अनाच्छादन के कारक भी कहा जाता है।

2. मिट्‌टी के निर्माण की प्रक्रिया इतनी धीमी है कि धरातल पर एक इंच की परत बनने में कई हजार वर्ष लग जाते हैं। जब शैलों के बड़े भाग अपक्षीण या अपक्षयित होते हैं तब अपक्षीण पदार्थ जल और वायु द्‌वारा मूल स्थान से हटकर किसी अन्य स्थान पर निक्षेपित हो जाते हैं।

पहले शैल बड़े-बड़े खंडों में अपक्षयित होते हैं। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि शैलों का महीन चूरा नहीं हो जाता है।

3. पृथ्वी के स्वरूप में परिवर्तन करने वाली विभिन्न प्रक्रियाएँ निम्नलिखित हैं; जैसे–भूकंप, ज्वालामुखी का फटना, कुछ अन्य परिवर्तन जैसे, अपक्षय के कारण ही धरातल के शैलों में भौतिक और रासायनिक परिवर्तन होते हैं। इन परिवर्तनों से शैलों में विघटन होता है या भौतिक रूप से टूट-फूट और रासायनिक रूप से विखंडन होता है। इस तरह पृथ्वी के स्वरूप में परिवर्तन होते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. अपरदन शब्द का अर्थ है–घिसना।

2. धरातल की ऊपरी सतह जो छोटे और असंगठित कणों वाली एक परत से ढकी है, मृदा या मिट्टी कहलाती है।

3. मिट्टी का निर्माण निम्नलिखित चार तत्त्वों से मिलकर हुआ है–
(क) अजैविक या खनिज तत्त्व, (ख) जैविक तत्त्व, (ग) जल, (घ) वायु।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) दो   2. (iv) जलोढ़ मिट्टी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. अपरदन की प्रक्रिया **गतिशील** प्रक्रिया है।

2. अपयक्ष को **जलवायु** बहुत अधिक प्रभावित करती है।

3. चूना पत्थर सरलता से **अपक्षय** हो जाते हैं।

4. अपक्षय एक ऐसी **भौतिक प्रक्रिया** है।

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 स्थलमंडल : भूमि का परिमंडल

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **अवसादी शैलें–**इन शैलों का निर्माण आग्नेय शैलों के अवसादों से होता है। इसलिए इन्हें द्वितीयक अथवा गौण शैल भी कहा जाता है। इन अवसादों के बिछाने का कार्य नदियाँ, पवन, हिमानी तथा सागरीय लहरों द्वारा किया जाता है; अतः इसे 'स्तरित शैल' कहते हैं। अवसादी शैल अधिकतर नदी, झील, समुद्र आदि की तली में बिछाई जाती हैं। इन शैलों में मृत जीवों (जीवाश्म) और वनस्पतियों के अवशेष पाए जाते हैं। जीवाश्म ईंधन; जैसे–पेट्रोलियम प्राकृतिक गैस एवं कोयला अवसादी शैलों से ही प्राप्त होते हैं। ये खनिज ऊर्जा के प्रमुख संसाधनों में शामिल हैं। इन शैलों का अपरदनकारी शक्तियों पर अधिक असर पड़ता है। हमें सड़कें इमारतें एवं बाँध

आदि बनाने के लिए मुख्य सामान अवसादी शैलों से मिलता है।

2. **आग्नेय शैलें–**इन शैलों का निर्माण सबसे पहले हुआ था; अतः इन्हें 'प्राथमिक शैल' भी कहा जाता है। इन शैलों की उत्पत्ति ज्वालामुखी से निकले मैग्मा के ठंडा होकर ठोस रूप धारण करने से हुई है। ये स्तरित नहीं होती तथा इनमें जीवाश्म भी नहीं पाए जाते। इनकी संरचना रवेदार होती है।

   ये शैलें दो प्रकार की होती हैं–

   पातालीय अथवा अंतर्वर्ती तथा बाह्य। पातालीय शैलें धरातल के बहुत नीचे गहरे मैग्मा के अनेक रूपों में ठोस हो जाने से बनती हैं तथा बाह्य शैलें पृथ्वी के धरातल के पास अथवा बाहर बनती हैं। पातालीय आग्नेय शैल 'गेब्रो' हैं तथा 'रायोलाइट' एवं 'बेसाल्ट' बाह्य आग्नेय शैल का उदाहरण हैं। आग्नेय शैलें कठोर होती हैं, जिस कारण अपरदनकारी शक्तियों का उन पर प्रभाव पड़ता है। इन शैलों में जस्ता, लोहा, बॉक्साइट, सोना, चाँदी आदि अनेक उपयोगी खनिज मिलते हैं।

3. **पृथ्वी की आंतरिक परतें–**पृथ्वी के आंतरिक भाग में निम्नलिखित परतें पाई जाती हैं–

   (i) भूपटल, (ii) मैंटल तथा (iii) अंतरतम।

   (i) **भूपटल–**यह पृथ्वी की पतली तथा सबसे ऊपरी ठोस परत है, जो पृथ्वी के चारों ओर विस्तृत है। इसकी मोटाई सभी जगह एक समान नहीं है। यह पर्वतों के नीचे सबसे अधिक मोटी (लगभग 20 किमी) है, जबकि महासागरों के नीचे (4-7 किमी तक) मोटी है। भूपटल की औसत गहराई 35 किमी है। शैलें तथा मिट्टियाँ भूपटल का निर्माण करती हैं। भूपटल दो खोलों में विभाजित है। ऊपरी परत या खोल 'सिआल' कहा जाता है। इस परत में सिलिका तथा एल्युमीनियम की प्रधानता है। इसके नीचे 'सिमा' परत है, जिसमें सिलिका तथा मैग्नीशियम की प्रधानता है। भूपटल तथा मैंटल परत के मध्य एक पतली तथा खंडित परत विद्यमान है, जिसे 'मोहोरोविसिक' या 'मोटो-असंबद्धता' कहते हैं। इस परत की गहराई महासागरों के नीचे 5-7 किमी तथा वलित पर्वतों के नीचे 45-70 किमी तक है।

   (ii) **मैंटल–**यह परत भूपटल के नीचे 35 किमी से लेकर 2900 किमी

की गहराई तक पाई जाती है। यह सघन तथा दृढ़ शैलों से निर्मित है। इसमें लोहा तथा मैग्नीशियम जैसे खनिज पाए जाते हैं। इसके ऊपरी भाग को दुर्बलतामंडल कहते हैं। इसका निचला भाग ठोस है तथा यह लचीली एवं आंशिक रूप से द्रवित अवस्था वाली परत है।

(iii) **अंतरतम–**पृथ्वी का केंद्रीय भाग अंतरतम कहलाता है। यह परत 'निफे' कहलाती है। इस परत में अत्यधिक सघन निकिल तथा लोहे की मात्रा पाई जाती है। इसका तापमान 2700°C तक पाया जाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. पृथ्वी की तीन परतें निम्नलिखित हैं–(i) भूपटल, (ii) मैंटल तथा (iii) अंतरतम।

2. पृथ्वी के भीतरी भाग की जानकारी का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत भूकंपीय तरंगें या सीस्मिक तरंगें हैं। ये तरंगें भूकंप के उद्गम केंद्र से उत्पन्न होती हैं। ये पृथ्वी के धरातल की ओर विभिन्न दिशाओं से चलती हैं। इनकी गति भी समान नहीं होती। इनकी गति उन पदार्थों की प्रकृति पर निर्भर करती है, जिनसे होकर ये गुजरती हैं। सीस्मिक तरंगें दो प्रकार की होती हैं–पी तरंगें (प्राथमिक तरंगें) एवं एस तरंगें (गौण तरंगें)।

3. **पृथ्वी का भूगर्भ–**भूगर्भ की बनावट के विषय में प्रारंभ से ही रहस्य तथा विवाद रहा है। आधुनिक समय में ज्वालामुखी एवं भूकंप तथा पृथ्वी पर ड्रिलिंग से भूगर्भ की संरचना के विषय में हमें जानकारी प्राप्त हुई है। ज्वालामुखी के फूटने से हमें ज्ञात होता है कि आज भी पृथ्वी का भीतरी भाग उष्ण एवं द्रवित रूप में है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. किसी भू-भाग के निचले तथा ऊँचे स्थानों के अंतर को उच्चावच के नाम से जाना जाता है।

2. जो पदार्थ पृथ्वी की भूपटल बनाते हैं, उन्हें शैल कहते हैं।

3. आग्नेय शैलें कठोर होती हैं और इन शैलों में अनेक प्रकार के खनिज मिलते हैं।

4. सीस्मिक तरंगें दो प्रकार की होती हैं–

(i) पी तरंगें (प्राथमिक तरंगें)

(ii) एस तरंगें (द्वितीयक या गौण तरंगें)।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) 71% 2. (iv) भू विज्ञान

3. (i) आग्नेय शैल को

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मूलरूप से हमारी पृथ्वी एक **आग का गोला** है।

2. कुछ पर्वतों के नीचे की भू-पर्पटी **20 किमी** तक मोटी है।

3. मैंटल **35-2900** गहराई तक पाया जाता है।

4. पृथ्वी का धरातल **जल और थल** से बना हुआ है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✗) 5. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 वायुमंडल

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. वायु का आवरण जो पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है, वायुमंडल कहलाता है। पृथ्वी एक अनोखा ग्रह है, क्योंकि इसके धरातल पर वायु एवं जल की उपस्थिति मुख्य है। इन दोनों के कारण ही जीवन संभव होता है। वायुमंडल ही तापमान को नियंत्रित करता है एवं इसे सजीव वस्तुओं के जीने योग्य बनाता है। वायुमंडल गैसों की एक पतली परत है। इसकी बिलकुल सटीक माप नहीं की जा सकती। परंतु अधिकांश वैज्ञानिक मानते हैं कि वायुमंडल पृथ्वी के ऊपर लगभग 1,600 किमी की ऊँचाई तक फैला हुआ है।

वायुमंडल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के कारण इससे बँधा हुआ है। वायु पृथ्वी के धरातल के पास सबसे घनी होती है और यह ऊपर बढ़ते-

बढ़ते पतली होती जाती है।

2. **पवन–**क्षैतिज संचार तथा वायु की गति को पवन कहते हैं। वायु के चलने की दिशा के अनुसार ही इसका नामकरण किया जाता है जैसे पश्चिम दिशा में चलने वाली वायु को 'पछुआ' तथा पूर्व दिशा से चलने वाली वायु को 'पुरवा' कहा जाता है। पवन हमेशा उच्च दाब की ओर ही चला करती है।

   ग्रहीय पवनें–पवनें जो एक ही दिशा में लगातार चलती हैं, ग्रहीय पवनें कहलाती हैं। ये पवनें तीन प्रकार की होती हैं–व्यापारिक पवनें, पछुआ पवनें एवं ध्रुवीय पवनें।

   (i) **व्यापारिक पवनें–**ये उप-उष्ण कटिबंध से भूमध्य रेखीय निम्न दाब पट्टियों तक प्रवाहित होने वाली स्थायी पवनें हैं। ये पवनें 30° उत्तरी अक्षांश एवं 30° दक्षिणी अक्षांश से भूमध्य रेखा की ओर उत्तर-पूरब तथा दक्षिण-पूरब से चलती हैं।

   (ii) **पछुआ पवनें–**ये पवनें उप-उष्ण कटिबंधीय उच्च दाब पट्टियों से उप-ध्रुवीय निम्न दाब पट्टियों तक चलती हैं। ये पवनें उत्तरी गोलार्द्ध में दक्षिण-पश्चिम और दक्षिणी गोलार्द्ध में उत्तर-पश्चिम से चलती हैं।

   (iii) **ध्रुवीय पवनें–**ये पवनें उत्तरी-ध्रुव और दक्षिणी-ध्रुव की उच्च दाब पटट्यों से निम्न दाब वाले उप-ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर चलती हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में ये उत्तर-पूरब दिशा से प्रवाहित होती हैं और दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिण-पूरब दिशा से चलती हैं। अतः ये अत्यधिक ठंडी और शुष्क होती हैं।

3. विभिन्न प्रकार की वर्षा का वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है–

   (i) **संवाहनिक वर्षा–**इस प्रकार की वर्षा भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में सामान्य है। भूमध्य रेखीय क्षेत्रों में वर्षभर तापमान अधिक रहता है, जिसके कारण गर्म आर्द्र वायु ऊपर उठती है। यह संवहनीय लहरों को उत्पन्न करती है। वायुमंडल के ऊपरी भाग में जाकर यह ठंडी हो जाती है और संघनन की प्रक्रिया आरंभ होती है तथा बिजली तथा गड़गड़ाहट के साथ भारी वर्षा होती है। इसे 'संवहनीय वर्षा' कहते हैं।

   (ii) **पर्वतीय वर्षा–**यह वर्षा का सबसे सामान्य रूप है। जब कभी

उष्ण एवं आर्द्र पवनों के मार्ग में कोई अवरोध पर्वत या पहाड़ी के रूप में सामने आ जाता है तो पवनें उससे टकराकर ढाल के सहारे से ऊपर उठकर ठंडी होती हैं और अपनी नमी को वर्षा के रूप में गिरा देती हैं। यह वर्षा पवनाभिमुख ढालों पर अधिक होती है और लौटते समय ये पवनें गर्म तथा शुष्क हो जाती हैं इसलिए पवनाविमुख ढालों पर कम वर्षा होती है। इन भागों को वृष्टि छाया प्रदेश कहते हैं। भारत का दक्कन का पठार वृष्टि छाया प्रदेश के अंतर्गत आता है।

भारत के पश्चिमी घाट और हिमालय के दक्षिणी ढाल पर्वतीय वर्षा के उदाहरण हैं।

(iii) **चक्रवातीय वर्षा–**यह वर्षा शीतोष्ण कटिबंध में होती है जब उष्ण तथा शीतल वायु एक-दूसरे से मिलती हैं। उष्ण वायु हल्की होने के कारण शीतल वायु के ऊपर उठती है, जिससे जलवाष्प का संघनन होता है तथा वर्षा होती है। इसे वाताग्री वर्षा भी कहते हैं।

4. पृथ्वी के धरातल पर क्षैतिज व ऊर्ध्वाधर रूप में तापमान में भिन्नता पाई जाती है। तापमान का अर्थ फारेनहाइट या सेल्सियस में मापी जाने वाली ऊष्मा की मात्रा से लिया जाता है। तापमान का वितरण तीन बातों पर निर्भर करता है–किसी स्थान का अक्षांश, उसकी समुद्र तल से दूरी तथा उस स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई।

(i) **अक्षांश–**किसी स्थान की विषुवत् रेखा से दूरी अर्थात् अक्षांश तथा उसकी सूर्यताप-प्राप्ति का गहरा संबंध है। विषुवत्‌रेखीय क्षेत्रों में सूर्यताप की मात्रा सबसे अधिक होती है, क्योंकि वहाँ वर्ष-भर सूर्य की किरणें सीधी पड़ती हैं। विषुवत् रेखा से ध्रुवों की ओर बढ़ते हुए तापमान में कमी होती जाती है। ध्रुवों पर सूर्य की किरणें सदैव तिरछी पड़ती हैं। अतः यही कारण है कि वहाँ तापमान न्यूनतम होता है।

(ii) **समुद्र तल से दूरी–**तापमान का प्रभाव समुद्र से दूरी पर भी पड़ता है। समुद्र तट के पास के स्थानों में हमेशा तापमान समान या मृदु बना रहता है। समुद्र से दूर जाने पर आंतरिक भागों में तापमान बढ़ता जाता है और जलवायु में भी विषमता पाई जाती है। ऐसा इसीलिए होता है क्योंकि जल स्थल की अपेक्षा देर से

गर्म होता है व देर से ठंडा होता है।

(iii) **समुद्रतल से ऊँचाई–**जैसे-जैसे हम समुद्र तल से ऊपर जाते हैं, तापमान कम होता जाता है, क्योंकि वायु का घनत्व कम होता जाता है। समुद्र तल से प्रति 165 मीटर की ऊँचाई पर तापमान 1° से कम होता जाता है। यही कारण है कि लगभग अक्षांशों में स्थित मैदानों की तुलना में पर्वतों का तापमान कम होता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. वायुमंडल में मुख्य रूप से नाइट्रोजन, ऑक्सीजन, कार्बन डाइ-ऑक्साइड, सल्फर डाइ-ऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और कुछ अक्रिय गैसें; जैसे–ऑर्गन, रेडान अल्प मात्रा में पाई जाती हैं।

2. जब मानवीय कार्यों से वायुमंडल में प्रदूषण की मात्रा बढ़ जाती है और इसका प्रभाव उसकी विभिन्न परतों पर पड़ता है। वायु में जो अनावश्यक या अवांछित कण मिले होते हैं, उन्हें **'वायु प्रदूषण'** कहते हैं।

3. वर्षण के विभिन्न स्वरूप निम्नलिखित हैं–संवाहनिक वर्षा, पर्वतीय वर्षा, चक्रवातीय वर्षा।

4. वायुमंडल की प्रमुख परतें निम्नलिखित हैं–क्षोभमंडल, समतापमंडल, मध्यमंडल, तापमंडल।

5. वायुमंडल की प्रकृति बहुत ही गतिशील है। तापमान, वायुदाब पवन, आर्द्रता और वर्षा आदि वायुमंडल के प्रमुख तत्त्व हैं। इनसे ही मिलकर मौसम और जलवायु की रचना होती है। वायुमंडल को अनेक ऊर्ध्वाधर परतों में विभाजित किया जाता है। वायुमंडल हमें तीव्र ताप और पराबैंगनी विकिरण से बचाता है। इसके अतिरिक्त वायुमंडल वातावरण को एक ऐसी स्थिति प्रदान करता है, जिसमें सभी प्रकार के जीव-जंतु पैदा होते हैं और वह उन्हें जीवित रखता है। पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति वायुमंडल को पृथ्वी के चारों ओर खींचे रखती है।

(ग) अति लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. वायु का आवरण जो पृथ्वी के चारों ओर पाया जाता है, **'वायुमंडल'** कहलाता है।

2. क्षैतिज संचार तथा वायु की गति को पवन कहते हैं।

3. जब संघनन की क्रिया सेल्सियस तथा इससे भी कम तापमान पर होती है तो अतिरिक्त जलवाष्प हिमकणों में परिवर्तित हो जाती है।

जब हिमकण आकार में बड़े हो जाते हैं तो ये भारी होकर हिम वर्षा के रूप में धरातल पर गिरने लगते हैं।

4. जब बादल (मेघ) उनका भार सँभालने में असमर्थ हो जाते हैं तथा वे पृथ्वी के धरातल पर गिरने लगते हैं। इस क्रिया को 'वर्षण' कहते हैं।
5. वायुमंडल की प्रमुख परतें निम्नलिखित हैं–क्षोभमंडल, समतापमंडल, मध्यमंडल, तापमंडल।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) झरना   2. (ii) 80

3. (i) पार्थिव   4. (i) नाइट्रोजन

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. पानी, ओला, हिम या हिम वर्षा के रूप में **वर्षण** होता है।

2. वायु में मौजूद जलवाष्प **आर्द्रता** कहलाती है।
3. वर्षा मुख्य रूप से **तीन** प्रकार की होती है।
4. पवनों के चलने का कारण **तापमान** में भिन्नता का होना है।
5. जलवायु का आशय **मौसम** के तत्वों के योग से है।

III. सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

(अ)	(ब)
1. रेनगेज	**(i) वर्षा**
2. कोरियालिस प्रभाव	**(ii) पवन विक्षेप**
3. हिमवर्षा	**(iii) वर्षण**
4. जलवाष्प	**(iv) आर्द्रता**
5. बैरोमीटर	**(v) वायुदाब**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 जलमंडल

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **जल-चक्र–**पृथ्वी की सतह पर सभी जल के स्रोतों सागर, महासागर,

झीलें, नदियाँ इत्यादि को जलमंडल कहते हैं। पृथ्वी की 71% सतह जल से घिरी हुई है तथा केवल 29% सतह ही धरातल है। पृथ्वी पर उपलब्ध जल का 97% भाग महासागरों में पाया जाता है, जो खारा है। केवल 3% ताजा जल (मीठा जल) पाया जाता है, जो हमें हिम, वर्षा, नदियों, झीलों तथा जलाशयों से प्राप्त होता है।

जल पृथ्वी पर तीन रूपों में विद्‌यमान है–तरल, ठोस तथा गैसीय रूप। जल की मात्रा विभिन्न रूपों में बदलती रहती है, परंतु पृथ्वी पर कुल जल की मात्रा (सभी रूपों को मिलाकर) समान रहती है, क्योंकि जल अपनी गति के कारण एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता रहता है अथवा एक रूप से दूसरे रूप में परिवर्तित होता रहता है। उदाहरण के लिए महासागरों का जल जलवाष्प के रूप में वायु में जाता है। वहाँ से यह वर्षा के रूप में स्थल या सागर में ही फिर वापस आ जाता है। वर्षा का जल नदियों द्‌वारा फिर समुद्र में वापस जा सकता है। जल की इस गति को जल-चक्र कहते हैं।

2. **जल बजट और जल संरक्षण–**हमारी पृथ्वी पर एक जल-बजट या भूमंडलीय जल संतुलन है, जिसमें वर्षण आय के समान है जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है। महासागरों, नदियों, झीलों या तालाबों में विद्‌यमान जल से ऊपर सूर्य की किरणें पड़ने से वाष्पीकरण होता है। पादप अपनी जड़ों द्‌वारा भूमि से जल ग्रहण करते हैं और अपनी पत्तियों द्‌वारा उसे जलवाष्प के रूप में पुनः वायु को दे देते हैं। पादपों की इस प्रक्रिया से जल वापस देने को वाष्पोत्सर्जन कहते हैं। कुछ क्षेत्रों में वसंत ऋतु में बर्फ पिघलने या वर्षा ऋतु में अधिक वर्षा के कारण अधिक जल एकत्र हो जाता है। इस अतिरिक्त जल के कारण जल संतुलन बिगड़ जाता है तथा इसके विपरीत स्थिति भी हो सकती है। गर्मियों में वाष्पीकरण बढ़ जाता है, जिससे मौसम शुष्क हो जाता है तथा जल आपूर्ति कम हो जाती है। हम पृथ्वी का जल बजट नहीं बदल सकते, परंतु जल के प्रयोग को नियंत्रित कर सकते हैं। नगरों के उद्‌योगों में प्रयोग होने वाले जल का बड़ा भाग नदियों या महासागरों में अनुपयोगी जल के रूप में वापस चला जाता है। इसमें प्रायः हानिकारक पदार्थ होते हैं। हम जल की मात्रा को बढ़ा नहीं सकते, क्योंकि वह सीमित है। बढ़ती हुई

जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पर्याप्त जल सुलभ हो सके इसलिए हमें जल के उपयोग में सावधानी बरतनी चाहिए। इस अमूल्य संसाधन को सुरक्षित रखने के लिए जल-संरक्षण पर हमें विशेष ध्यान देना चाहिए।

3. महासागरीय जल का नियमित अंतराल पर दिन में दो बार चढ़ाव और उतार क्रमशः ज्वार-भाटा कहलाता है। ज्वार-भाटा अधिकांशतः सागरों व महासागरों में अनुभव होते हैं। पृथ्वी की सतह पर सूर्य और चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल ज्वार-भाटा का कारण है। ज्वार-भाटा दो प्रकार के होते हैं–उच्च एवं निम्न ज्वार-भाटा।
   जब समुद्री जल स्तर ऊँचा हो जाता है वह ज्वार कहलाता है एवं जब समुद्रीय जल का स्तर नीचे गिरता है तब यह भाटा कहलाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. हमारी पृथ्वी के अंदर जो जल विद्यमान है वह जल भूमिगत जल कहलाता है। भूमिगत जल पृथ्वी पर मौजूद कुल जल का केवल 1% ही है।

2. जल प्रदूषण का मुख्य कारण नगरों का कूड़ा-करकट एवं औद्योगिक अवशिष्ट नदियों-नालों में गिरना है। फिर ये नदियाँ समुद्र में मिलकर समुद्र के पानी को भी प्रदूषित कर देती हैं।

3. हमारी पृथ्वी पर एक जल-बजट या भूमंडलीय जल संतुलन है, जिसमें वर्षण आय के समान है, जबकि वाष्पीकरण और वाष्पोत्सर्जन व्यय है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. प्रमुख महासागरीय धाराएँ दो प्रकार की होती हैं–
   (i) गर्म धाराएँ और (ii) ठंडी धाराएँ।

2. जल तीन प्रकार की गतियाँ करता है–(i) ज्वार-भाटा (ii) लहरें तथा (iii) धाराएँ।

3. जब समुद्री जल स्तर ऊँचा हो जाता है तो वह 'ज्वार' कहलाता है।

4. महासागरों में 1% भी ताजे जल की मात्रा नहीं पाई जाती है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) व्यवसाय 2. (i) तीन 3. (iii) निश्चित

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. दूषित जल को **साफ** करके पुनः प्रयोग में लाया जा सकता है।

2. महासागरों का जल **खारा** होता है।

3. समुद्र का जल सदैव **गतिमान** रहता है।

4. आज लहरों की शक्ति का प्रयोग **बिजली** उत्पादन के लिए भी किया जाता है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 जैवमंडल

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **जैवमंडल–**जिस भाग पर जीव निवास करते हैं, वह 'जैवमंडल' कहलाता है। पृथ्वी पर समस्त जीवन इस पेटी में ही स्थित है। जैवमंडल की मोटाई केवल 28 किलोमीटर है, इसका विस्तार समुद्रतल के नीचे 11 किमी तक तथा पृथ्वी के ऊपर 17 किमी तक है। सभी प्रकार का जीवन इस मंडल में ही पाया जाता है, चाहे वह सूक्ष्म जीव, प्राणी जगत तथा पेड़-पौधों के रूप में है। अधिकतर जन-जीवन, धरातल और वायुमंडल के नीचे वाले भाग में पाया जाता है।

पृथ्वी सौरमंडल का अकेला ऐसा ग्रह है जिस पर जीवन पाया जाता है। इस ग्रह पर जल और वायु की उपलब्धता तथा तापमान की उपयुक्त दशाएँ विद्यमान हैं जो जीवन के लिए अति आवश्यक हैं।

सागरों में सबसे पहले जीवन का आरंभ हुआ। 'अमीबा' नामक एककोशिकीय जीव से जीवों का विकास हुआ। इसके बाद क्रमशः जीवों तथा पौधों की लाखों प्रजातियों का विकास हुआ। जीवों की इस विविधता को 'जैव विविधता' कहते हैं।

2. **पारितंत्र अथवा पारिस्थितिकी तंत्र–**प्राणी एवं पौधे मिलकर एक

पारितंत्र अथवा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करते हैं। सभी जीवधारी परस्पर इस पारितंत्र पर्यावरण में क्रिया-प्रतिक्रिया करते हैं। 'पारिस्थितिकी' में जीवों तथा उनके पर्यावरण का अध्ययन किया जाता है।

जैविक व अजैविक पारितंत्र के दो अंग होते हैं। ये दोनों अंग सौर ऊर्जा पर निर्भर रहते हैं। उत्पादक अर्थात् पौधे तथा उपभोक्ता प्राणी एवं वियोजक जैविक तत्वों में सम्मिलित हैं तथा अजैविक तत्वों में जल, तापमान, जलवायु तथा प्रकाश सम्मिलित हैं। सभी प्राणी जीवित रहने के लिए परस्पर एक-दूसरे पर निर्भर हैं। उदाहरण के लिए हरे पौधे सूर्य के प्रकाश में 'प्रकाश-संश्लेषण' क्रिया द्वारा अपना भोजन स्वयं बनाते हैं इसीलिए उन्हें 'उत्पादक' कहते हैं। जो प्राणी अपना भोजन स्वयं नहीं बना सकते वे दूसरों पर निर्भर रहते हैं; अतः उन्हें 'उपभोक्ता' कहते हैं। उपभोक्ता तीन प्रकार के होते हैं–शाकाहारी, मांसाहारी एवं सर्वाहारी। शाकाहारी भोजन के लिए पेड़-पौधों पर निर्भर होते हैं। मांसाहारी, शाकाहारी प्राणियों के शिकार करने से भोजन पाते हैं। मनुष्य दोनों प्रकार (शाकाहारी व मांसाहारी) का सेवन करता है; अतः वह सर्वाहारी कहलाता है। जीवों के बीच इस आहार संबंध को 'आहार श्रृंखला' कहते हैं।

जीवों के प्रकार एवं भौतिक पर्यावरण के आधार पर प्रकृति में अनेक प्रकार के पारितंत्र पाए जाते हैं; जैसे–सरोवरीय पारितंत्र, सागरीय पारितंत्र, घास पारितंत्र, वन पारितंत्र, मरुस्थलीय पारितंत्र तथा पर्वतीय पारितंत्र आदि।

3. **वन**–वृक्षों की अधिकता वाले क्षेत्र वन कहलाते हैं। वनों में वृक्षों के अलावा घास, लताएँ तथा कँटीली झाड़ियाँ भी उगती हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार के वृक्ष, भिन्न-भिन्न प्रकार की मृदा, भौतिक एवं जलवायवीय दशाओं में उगते हैं। कुछ वृक्षों की लकड़ी कठोर तथा कुछ वृक्षों की लकड़ी मुलायम (कोमल) होती है। कुछ वनों में सदाहरित वृक्ष पाए जाते हैं तथा कुछ वनों में पतझड़ वाले वृक्ष अधिकता से उगते हैं। कुछ वृक्षों की पत्तियाँ सँकरी तथा कुछ की चौड़ी पत्तियाँ होती हैं। उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर संसार में मुख्य रूप से निम्नलिखित वन पाए जाते हैं–

(i) **उष्ण कटिबंधीय सदापर्णी वन या 'वर्षावन'–**इन वनों के वृक्ष किसी भी मौसम में अपनी पूरी पत्तियाँ नहीं गिराते। इन वृक्षों की पत्तियाँ चौड़ी होती हैं तथा लकड़ी कठोर। शीशम, आबनूस आदि इन वनों के प्रमुख वृक्ष हैं।

(ii) **उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन–**इन वनों के वृक्ष शुष्क मौसम में अपनी पूरी पत्तियाँ गिरा देते हैं। शीशम, साल, सागौन आदि प्रमुख वृक्ष हैं, जो आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं।

(iii) **भूमध्यसागरीय चौड़ी पत्ती के वन–**इस प्रकार के वन भूमध्यसागरीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं। ये वन सदाहरित होते हैं।

(iv) **शीतोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्ती के वन–**इन वनों के वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। इनकी पत्तियाँ चौड़ी होती हैं तथा लकड़ी कठोर।

(v) **शीतोष्ण कटिबंधीय शंकुधारी वन–**इन वनों के वृक्षों की पत्तियाँ शंक्वाकार होती हैं। इनके मुलायम लकड़ी के वृक्षों की प्रजाति का व्यावसायिक महत्त्व है। रूस के टैगा वन इस प्रकार के अत्यधिक खर्चीले जंगल हैं।

4. मनुष्यों की बढ़ती हुई जनसंख्या ने प्राकृतिक क्रिया-कलापों में हस्तक्षेप करके पर्यावरण को बदल दिया है। वनोद्योग, कृषि, पशुचारण, आखेट, मत्स्य, खनन एवं नगरीकरण जैसे अनेक मानवीय क्रियाओं का प्रकृति की जैव विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। कृषि भूमि के विस्तार तथा लकड़ी की प्राप्ति के लिए मनुष्य ने वनों का लगभग सफाया ही कर दिया है। वन विनाश का बुरा प्रभाव वन्य जीवों पर भी पड़ा है। वनों के काटे जाने से जीवों के प्राकृतिक आवास समाप्त हो गए हैं। वन के विनाश के दुष्परिणाम बाढ़, मृदा का अपरदन, मरुस्थल प्रसार तथा जलवायु परिवर्तन आदि के रूप में दिखाई देते हैं। वन्य जीवों के आखेट से उनकी अनेक जातियाँ लुप्त हो गई हैं तथा अनेक जातियाँ लुप्त होने की कगार पर हैं। नगरीकरण की वृद्धि से भी प्राकृतिक पर्यावरण का विघटन हुआ है और प्रकृति का संतुलन गड़बड़ा गया है।
मानव द्वारा प्रकृति से छेड़छाड़ करने से विश्व के तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसने 'वैश्विक तापन' की समस्या को उत्पन्न किया है। इस समस्या से विश्व के सभी देश प्रभावित हैं। इससे सभी देश चिंतित हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका में सितंबर, 2002 में 'पृथ्वी सम्मेलन-II' आयोजित किया गया। इस सम्मेलन में पृथ्वी के पर्यावरण के विघटन से संबंधित चर्चा की गई तथा संपूर्ण विश्व से पर्यावरण बचाव के प्रयास करने का अनुरोध किया गया। इस सम्मेलन में निम्नलिखित क्षेत्रों की चर्चा की गई स्वास्थ्य रक्षा, स्वच्छ पेयजल, सफाई व्यवस्था, विद्‌युत उत्पादन, ऊर्जा के प्रदूषण विहीन साधन, पृथ्वी की जैव विविधता का संरक्षण एवं कृषि।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. प्राणी अथवा जंतु जगत के अंतर्गत प्राणी, सरीसृप, कीट-पतंगें, कीड़े-मकोड़े, पक्षी, मछलियाँ आदि आते हैं। समस्त विश्व में एक करोड़ से अधिक प्राणियों की जातियाँ पाई जाती हैं। जिन प्राणियों को पालतू नहीं बनाया जा सकता, उन्हें 'वन्य जीव' कहते हैं। वन्य जीवों की विभिन्न जातियाँ होती हैं जो अलग-अलग प्रकार की जलवायु दशाओं में अपने को समायोजित करती हैं।

2. पृथ्वी के धरातल पर उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक वनस्पति पादप जगत के अंतर्गत आती है। वनस्पति उन समस्त पेड़-पौधों को कहते हैं, जो किसी क्षेत्र में मनुष्य के प्रयासों के बिना अपने आप प्राकृतिक रूप में उगते हैं। प्राकृतिक वनस्पति में कँटीली झाड़ियाँ, घास प्रदेश, वृक्षों के समूह (वन) आदि सम्मिलित किए जाते हैं। वर्षा और तापमान ऐसे मुख्य कारक हैं, जो किसी क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली वनस्पति को निर्धारित करते हैं।

3. ये अनेक प्रकार की जलवायुवीय दशाओं में उगने वाली घासें तथा लंबी जड़ वाले पौधे हैं। ये कम वर्षा वाले भागों में उगती हैं जहाँ बड़े-बड़े पेड़ उग नहीं पाते। घासों के अलावा इन भागों में छोटे एवं छितरे पेड़ भी उगते हैं। ये घास प्रदेश दो प्रकार के होते हैं–(i) शीतोष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र तथा (ii) उष्ण कटिबंधीय घास क्षेत्र।

4. मरुस्थल में उष्ण कटिबंधीय शुष्क जलवायु पाई जाती है।

5. पारितंत्र दो प्रकार का होता है–(i) जैविक व (ii) अजैविक।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. प्राकृतिक वनस्पति में घास प्रदेश, वन एवं मरुस्थलीय वनस्पति शामिल हैं।

2. जीवन की उत्पत्ति सर्वप्रथम सागरों में हुई।

3. वनों में रहने वाले जीवों को वन्य जीव कहते हैं।

4. विभिन्न जीवों के बीच पोषण की श्रृंखला को 'आहार श्रृंखला' कहते हैं।
5. सदाहरित वनों के वृक्ष किसी भी मौसम में अपनी पूरी पत्तियाँ नहीं गिराते हैं। शीशम, आबनूस आदि इन वनों के प्रमुख वृक्ष हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) पौधों तथा प्राणियों की विविधता
2. (i) महासागर में
3. (i) जैवमंडल

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. बायोम **सागर** में भी पाए जाते हैं।
2. टुंड्रा एक **शीतल** मरुस्थल है।
3. जैवमंडल का सर्वप्रमुख प्राणी **मानव** है।
4. पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते हैं; अतः ये **भोजन उत्पादक** हैं।
5. मरुस्थलीय वनस्पति **कँटीली** होती है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

(घ) सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

(अ)	(ब)
1. मनुष्य	**(i) पर्यावरण का विनाशक**
2. जैवमंडल का विस्तार	**(ii) 28 किमी तक**
3. उत्पादक	**(iii) हरे पौधे**
4. शीत मरुस्थल	**(iv) टुंड्रा**
5. जीवनयुक्त ग्रह	**(v) पृथ्वी**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 मानवीय पर्यावरण

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. पृथ्वी पर मानव ही एक ऐसा प्राणी है जिसने प्राकृतिक पर्यावरण को

अपने अनुकूल बनाने का निरंतर प्रयास किया है और आज मानव के प्रयासों से प्राकृतिक पर्यावरण में इतना बदलाव आया है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती है। मानव द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में लाए गए बदलाव को ही मानवीय पर्यावरण कहा जाता है। मानवीय अथवा सांस्कृतिक पर्यावरण हमारे संपूर्ण पर्यावरण का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

आदिमानव वन्य जीवों की तरह गुफाओं या पेड़ों पर रहते थे तथा भोजन की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते रहते थे। जब धीरे-धीरे मानव ने पशुओं को पालना आरंभ किया, तो वह एक स्थान पर अपनी झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। अतः इस प्रकार छोटी-छोटी बस्तियाँ बनने लगीं।

जनसंख्या बढ़ने से नगर सभ्यता का विकास हुआ। अफ्रीका व एशिया में प्रारंभिक नदी घाटी सभ्यता का आरंभ हुआ। ये वास्तव में नगर सभ्यताएँ थीं। ज्यादातर नगर और कस्बे नदी किनारे बसाए गए, क्योंकि वहाँ जीवन के लिए आवश्यक वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो जाती थीं। नगरों की वृद्धि का श्रेय खनन व विनिर्माण उद्योग को जाता है।

2. **बस्तियों के विकसित होने के कारण–**बस्तियों (गाँवों, कस्बों और नगरों) के विकसित होने के अनेक कारण हैं–

   (i) **कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ–**जब तक मनुष्य ने भूमि से भोजन उत्पन्न करने की विधि नहीं खोजी थी तब तक स्थायी घरों या बस्तियों की संकल्पना नहीं थी, क्योंकि आखेट करने वाले या वस्तुएँ एकत्र करने वाले मानव-समुदाय को भोजन की खोज में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकना पड़ता था। अतः खेती के आविष्कार से ही स्थायी बस्तियों का प्रारंभ हुआ। भूमि से भोजन पैदा करना सीखने के पश्चात् ही मानव स्थायी स्थलों पर बस्तियाँ स्थापित कर सका। परंतु भूमि से भोजन प्राप्त करने (कृषि करने) के लिए जल की उपलब्धता बहुत महत्त्वपूर्ण थी। जल के महत्त्व के कारण ही सारी प्राचीन सभ्यताओं का विकास नदी घाटियों में हुआ। जल के चारों ओर बसने वाली बस्तियों को 'आर्द्र-बिंदु बस्तियाँ' कहते हैं। नदी घाटियों में भूमि भी उपजाऊ होती हैं तथा

कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ भी होती हैं।

(ii) **स्थलाकृति–**भूमि का स्वरूप भी बस्तियों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। मैदानी क्षेत्रों में कस्बों तथा नगरों का विकास अधिक होता है। भारत के उत्तरी मैदान में उपयुक्त स्थलाकृति के कारण अनेक कस्बे या नगर विकसित हुए हैं।

(iii) **प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्य–**किसी स्थान का प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्य भी पर्यटन पर आधारित नगरों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

(iv) **औद्योगिक केंद्र–**जब किसी स्थान पर कोई बड़ा कारखाना स्थापित किया जाता है, तो वहाँ कारखानों में काम करने वाले लोग कारखाने के आस-पास के क्षेत्रों में रहने लगते हैं और वह स्थान एक बड़े नगर के रूप में विकसित हो जाता है। भारत के नगरों की जनसंख्या में तीव्र वृद्धि का कारण औद्योगिकीकरण है।

3. परिवहन व्यक्तियों एवं सामान के आवागमन के साधन होते हैं। पुराने समय में अधिक दूरी की यात्रा करने में बहुत समय लगता था, क्योंकि लोग या तो पैदल चलते थे या अपने सामान को ढोने के लिए पशुओं का प्रयोग करते थे। पहिए की खोज से परिवहन आसान हो गया। समय के साथ-साथ परिवहन के विभिन्न साधनों का विकास होता गया, लेकिन आज भी लोग परिवहन के लिए पशुओं का प्रयोग करते हैं।

   परिवहन के साधन–सड़क मार्ग, रेलमार्ग, जलमार्ग व वायुमार्ग परिवहन के प्रमुख साधन हैं। सड़क व रेलमार्ग स्थलीय परिवहन के साधन हैं।

   सड़कें परिवहन का प्रमुख साधन हैं। छोटी दूरी की यात्राओं के लिए तो यह विशेष उपयोगी है। स्वचालित वाहनों के लिए पक्की व चौड़ी सड़कें आवश्यक हैं। सड़कें कई प्रकार की होती हैं। एक राष्ट्रीय राजमार्ग जो पक्के और चौड़े होते हैं, ये विभिन्न राज्यों को आपस में जोड़ते हैं। दो राज्य मार्ग जो राज्य के नगरों को जोड़ते हैं और तीन जिला मार्ग जो राज्यों, नगरों व गाँवों को जोड़ते हैं। परंतु पहाड़ व पठारों की जमीन ऊबड़-खाबड़ होती है, इसलिए वहाँ सड़क बनाना मुश्किल होता है। उत्तरी मैदानों में भूमि समतल होने के कारण सड़कों का निर्माण सुगमता से हो जाता है। सड़कों की सुविधा होने

के कारण ट्रकों व अन्य परिवहन के साधनों के द्‌वारा जल, दूध, सब्जी, अंडे आदि शीघ्र नष्ट होने वाली खाद्‌य वस्तुओं को सुदूर स्थानों पर भेजा जा सकता है।

रेल परिवहन

भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा करने के लिए, सामान ले जाने व लाने के लिए रेल यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है। आजकल यह यातायात का एक महत्त्वपूर्ण साधन बन गया है। रेलवे उद्‌योगों के लिए कच्चा माल ढोता है एवं तैयार माल को देश भर में पहुँचाता है। लोग लंबी यात्रा के लिए रेल यातायात को प्राथमिकता देते हैं।

जल परिवहन

जल यातायात का सबसे सस्ता साधन है, क्योंकि इसके लिए पानी में पटरियाँ नहीं बिछानी पड़तीं और न ही सड़कें बनानी पड़ती हैं। नदी, नहर, झील, सागर का प्रयोग जल यातायात के लिए होता है।

जल सबसे प्राचीन यातायात का साधन है। आजकल नाव, स्टीमर तथा जहाज बहुत-से यात्रियों तथा सामान को ले जाते हैं। इनमें से अधिकतर इंजन से चलते हैं; अतः उनकी गति काफी तेज होती है। बहुत-से जहाज व्यापारिक सामान को एक देश से दूसरे देश तक ले जाते हैं। अधिकतर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समुद्री जहाजों द्‌वारा होता है।

वायुमार्ग

यातायात के साधनों के क्षेत्र में यह सबसे आधुनिक साधन है। मानव पक्षी की तरह आकाश में उड़ना चाहता था; अतः उसने पक्षी की तरह उड़ने के लिए किसी वस्तु का आविष्कार करना चाहा। हवाई जहाज के आविष्कार ने सारे संसार को समीप कर दिया। आप हवाई जहाज से कुछ घंटों में ही कई हजार किलोमीटर की दूरी तय कर सकते हैं। आप 24 घंटों में पूरा संसार घूम सकते हैं। परंतु यह सबसे महँगा यातायात का साधन है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. कृषि के प्रारंभ से ही बस्तियों का निर्माण प्रारंभ हो गया। बस्तियों के निर्माण का मुख्य कारण कृषि के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ और प्राकृतिक या नैसर्गिक सौंदर्य और एक मुख्य कारण औद्योगिक केंद्र है तथा दूसरा धार्मिक कारण था।

2. भूमि का स्वरूप भी बस्तियों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देता

है। मैदानी क्षेत्रों में कस्बों तथा नगरों का विकास अधिक होता है। भारत के उत्तरी मैदान में उपयुक्त स्थलाकृति के कारण अनेक कस्बे या नगर विकसित हुए हैं। मैदानी क्षेत्रों में सड़कें तथा रेलमार्ग बनाना आसान होता है। परंतु यदि स्थलाकृति बहुत ऊबड़-खाबड़ अर्थात् ऊँची-नीची हो तो बस्तियाँ कम होंगी, क्योंकि यहाँ भूमि की प्रकृति लोगों के आवागमन में बाधा उत्पन्न करती है।

3. परिवहन का सबसे सस्ता साधन रेल परिवहन है, क्योंकि इसमें किराया बहुत कम लगता है। भूमि पर लंबी दूरी की यात्रा तय करने के लिए तथा सामान लाने व ले जाने के लिए रेल यातायात सस्ता एवं सुविधाजनक है।
4. **ग्रामीण बस्तियाँ–**ग्रामीण बस्तियों में पहले तो मिट्टी, बाँस लकड़ी और घास-फूस की झोंपडियाँ बनाई जाती थीं, परंतु अब ग्रामीण बस्तियाँ भी पक्की ईंटों से बनायी जाने लगीं हैं।

   नगरीय बस्तियाँ–नगरों में घर बहुमंजिला इमारतों के बने होते हैं। कुछ बड़े घरों को 'बँगला' भी कहा जाता है। इनमें घर के सामने बड़े-बड़े बगीचे (लॉन) होते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. बस्तियों से आशय मानव समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से रहने के लिए स्थापित किए गए स्थानों से है।

2. विभिन्न स्थानों के मध्य लोगों व सामान ले जाने की सुविधा को परिवहन कहते हैं।
3. संदेश भेजने व ग्रहण करने को ही 'संचार' कहते हैं। संदेश लिखित व मौखिक दो प्रकार के होते हैं।

   मौखिक संदेश टेलीफोन या मोबाइल से भेजे जाते हैं और लिखित संदेश कंप्यूटर (इंटरनेट) से भेजे जाते हैं।
4. **परिवहन के प्रमुख साधन–**सड़क मार्ग, रेलमार्ग, जलमार्ग व वायुमार्ग परिवहन के प्रमुख साधन हैं। सड़क व रेलमार्ग स्थलीय परिवहन के साधन हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) रेल परिवहन 2. (i) इंटरनेट

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मानवीय पर्यावरण को **अप्राकृतिक** पर्यावरण भी कहते हैं।

2. **वायु** परिवहन महँगा होता है।

3. उत्तर भारत में नगरों का विकास अनुकूल **पर्यावरण** के कारण हुआ।

4. जल के चारों ओर बसने वाली बस्तियों को **आद्र-बिंदु** बस्तियाँ कहते हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

(घ) सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

(अ)	(ब)
1. कृषि तथा पशुपालन का आरंभ	**(i) नवपाषाण काल**
2. प्रारंभिक नदी घाटी सभ्यताएँ	**(ii) एशिया और अफ्रीका**
3. पर्यटन केंद्र	**(iii) कश्मीर और गोवा**
4. मैट्रो रेल सेवा	**(iv) दिल्ली और कोलकाता**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

8 विश्व के कुछ विशिष्ट प्रदेशों में जनजीवन

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. दक्षिण अमेरिका के ब्राजील में अमेजन घाटी स्थित है। नील नदी के बाद यह विश्व की सबसे बड़ी नदी है परंतु आकार व जल में सबसे अधिक है, यह सबसे बड़ा जल प्रवाह भी है अतः इसे अमेजन बेसिन कहा जाता है। यह नदी एंडीज पर्वत से निकलकर अटलांटिक महासागर में मिल जाती है। इस नदी में विश्व का 20% ताजा जल (पीने योग्य) पाया जाता है। नदी क्षेत्र होने के कारण यहाँ की भूमि अत्यधिक उपजाऊ है।

अमेजन बेसिन में सदाहरित वर्षा वनों का विशाल भंडार है। यहाँ लगभग 50,000 प्रजातियों के पेड़-पौधे, 15,00,000 प्रकार के कीट-

पतंगें, हजारों तरह की मछलियाँ तथा स्तनपाई (Mammal) जानवर पाए जाते हैं। यहाँ पशुओं में हाथी, गैंडा, गोरिल्ला, चिपैंजी तथा मगरमच्छ आदि सभी प्रकार के जीव पाए जाते हैं। अमेजन बेसिन खनिज, प्राकृतिक वनस्पति व खेती आदि के अनुकूल परिस्थितियों का स्वामी है परंतु अब विकास के कारण अनेक जातियों के लोग यहाँ आकर बस गए हैं जिसके कारण वनों की अमूल्य संपदा को काटा जा रहा है। वनों को समाप्त करने से यहाँ के पर्यावरण को अधिक नुकसान पहुँचेगा जिससे विश्व भी प्रभावित होगा।

2. उत्तरी अमेरिका के समशीतोष्ण घास के मैदान प्रेयरी कहलाते हैं। महाद्वीप के मध्य भाग में स्थित होने के कारण यहाँ वर्षा बहुत कम होती है। नमी के अभाव में वृक्षों के बजाय यहाँ घास ही उगती है। प्रेयरी प्रदेश का विस्तार कनाडा से लेकर संयुक्त राज्य अमेरिका तक है। यूरेशिया के स्टेप्स की भाँति यहाँ के लोगों का मुख्य धंधा पशुपालन न होकर खेती करना है। इनमें हरी घास के अतिरिक्त नदी घाटियों में कहीं वृक्षों के झुंड भी दिखाई पड़ जाते हैं। प्रेयरी प्रदेश में कृषि ने पशुपालन को समाप्त कर दिया है। लोगों ने घास को साफ करके यंत्रों से विस्तृत खेती प्रारंभ कर दी है। प्रेयरी प्रदेश में 1885 ई० में कनाडियन पैसीफिक रेलवे बनने से प्रगति की लहर दौड़ गई। रेलवे लाइन के बनते ही यहाँ लोगों ने बस कर तेजी से बड़े-बड़े नगरों की स्थापना कर डाली है। प्रेयरी प्रदेश के शुष्क पश्चिमी भाग में लोगों का मुख्य धंधा गाय पालना है। यहाँ रॉकी पर्वत के पाद प्रदेश में पशुपालन के लिए विशाल रेन्चेस बनाए गए हैं।

3. यह विस्तृत मैदानी प्रदेश हिमालय के दक्षिण में नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी से बना है। इसे भारत का उत्तरी मैदान भी कहा जाता है। वास्तव में, इस मैदानी भाग की तीन मुख्य नदियाँ हैं सिंधु, गंगा और ब्रह्मपुत्र। सिंधु नदी का एक बड़ा भाग अब पाकिस्तान में है। इस प्रदेश की जलवायु हर प्रकार की फसल उगाने के लिए उपयुक्त है। यह कृषि प्रधान क्षेत्र है। चावल, गेहूँ, कपास, गन्ना, जूट, चना, दालें तथा सब्जियाँ इत्यादि इस क्षेत्र में उगाई जाती हैं। पहाड़ी इलाकों पर चावल की खेती की जाती है। यहाँ के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है। सिंचाई के लिए कई नहरें भी बनाई गई हैं।

यह मैदानी क्षेत्र पंजाब से असम तक अत्यधिक जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यहाँ कई बड़े शहर बने हैं। यहाँ सड़कों और रेलगाड़ी की पटरियों का जाल बिछा है। कृषि के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के कृषि पर आधारित छोटे और बड़े उद्योग; जैसे–वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, जूट उद्योग आदि इस क्षेत्र में पाए जाते हैं। यहाँ के कुछ बड़े शहर जो गंगा नदी के किनारे बसे हैं प्रमुख तीर्थस्थान हैं; जैसे–हरिद्वार, इलाहाबाद और वाराणसी।

4. **वेल्ड में जन-जीवन–**यह दक्षिण अफ्रीका का विस्तृत घास का मैदान है। यह दक्षिण अफ्रीका के पठार के पूर्वी भाग में स्थित है। इसके अंतर्गत केप कालोनी का पूर्वी भाग, संपूर्ण ऑरेंज फ्री स्टेट तथा ट्रांसवाल का अधिकतर भाग सम्मिलित हैं। जैसे-जैसे हम पूरब से पश्चिम की ओर जाते हैं, वर्षा की मात्रा कम होती जाती है, क्योंकि समुद्र तट से दूरी बढ़ती जाती है। यह जलवायु वृक्षों के लिए बहुत शुष्क होती है। घास यहाँ की प्राकृतिक वनस्पति है। पश्चिम की ओर आगे जाने पर वर्षा और कम हो जाती है तथा घास के मैदान मरुस्थल में विलीन हो जाते हैं।

   उच्च पठारी भाग जो 1,120 मीटर से 1,670 मीटर तक ऊँचा है, उच्च वेल्ड कहलाता है तथा 610 मीटर से 1,120 मीटर तक ऊँचाई वाला पठारीय भाग मध्य वेल्ड कहलाता है। इससे नीचे वाला भाग निम्न वेल्ड कहलाता है। उच्च वेल्ड के मध्य एक पर्वत श्रेणी है, जो क्षेत्रों के बीच जल विभाजक का काम करती है। यहाँ जांबेजी, लिम्पोपो तथा साबी नदियाँ ढाल पर से नीचे की ओर बहती हैं तथा जलप्रपात व क्षिप्तिकाएँ बनाती हैं।

   यहाँ पैदा होने वाली मुख्य खाद्य फसल मक्का है। यहाँ से मक्का का बड़ी मात्रा में निर्यात किया जाता है। इस क्षेत्र को 'मक्का का त्रिभुज' कहते हैं। अतः इस क्षेत्र में पशुपालन भी एक मुख्य व्यवसाय है।

   इस क्षेत्र के कुछ भाग खनिज संपदा में धनी है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भूमि का एक बड़ा भाग जो रेत से ढका होता है मरुस्थल कहलाता है। इन क्षेत्रों में जल की अत्यधिक कमी होती है। यहाँ अल्प वर्षा, बहुत कम फसल एवं वनस्पतियाँ और उष्ण तापमान होता है। यह विश्वास करना कठिन होता है कि करोड़ों वर्ष पूर्व यहाँ हरियाली एवं

उपजाऊ मिट्टी थी।

2. लद्दाख ठंडे मरुस्थल का उदाहरण है। यह जम्मू और कश्मीर का एक जिला है। लद्दाख की राजधानी 'लेह' भारत का सबसे ठंडा शहर है और वर्ष के अधिकांश भाग में यह बर्फ से ढका रहता है। अतः इसे खपा-चान कहते हैं, जिसका अर्थ है–बर्फ की धरती। यह पर्वतीय क्षेत्र है। अत्यधिक ठंड होने के कारण यहाँ वनस्पति भी बहुत कम होती है। कुछ पर्वतीय ढालों पर एल्म, सिडार और विल्लो नामक वृक्ष उगते हैं। लद्दाख में जंगली याक, जंगली भेड़, खरगोश, कियांग (खच्चर) और बारहसिंघा पाए जाते हैं।
3. मरुस्थल में जहाँ पानी के स्रोत होते हैं, उस स्थान को मरुद्यान कहते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. सहारा विश्व का सबसे बड़ा गर्म मरुस्थल है

2. मरुस्थल का जहाज ऊँट को कहते हैं।
3. वह जल जो एक भूमि के दो हिस्सों को बीच में से अलग करता है। विभाजक जल कहलाता है।
4. उत्तरी अमेरिका के समशीतोष्ण घास के मैदान प्रेयरी कहलाते हैं।

(घ) इनके नाम लिखिए–

उत्तर– 1. लौह-अयस्क, सोना, टिन, ताँबा, मैंगनीज, बॉक्साइट

2. एल्म, सिडार और विल्लो
3. सोना, कोयला, हीरा
4. जांबेजी, लिम्पोचो, साबी

(ङ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) ऊँट को 2. (iii) गर्म मरुस्थलों में

3. (ii) शीत ऋतु में

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. प्रेयरी क्षेत्र की सबसे प्रमुख खाद्य फसल **गेहूँ** है।

2. कनाडा के प्रेयरी क्षेत्र का मुख्य नगर **विनिपेग** है।
3. लद्दाख का सबसे प्रमुख उद्योग **कृषि और पशुपालन** है।
4. अमेजन घाटी में रहने वाले आदिवासियों की **मक्का** मुख्य

खाद्य फसल है।

5. सहारा मरुस्थल की सबसे प्रमुख भू-आकृति **बालू के टिब्बे** हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✗) 6. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

इकाई-3 : सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन

1 भारतीय संविधान का निर्माण

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत का संविधान भारतीय लोगों के प्रतिनिधियों द्वारा लंबे विचार-विमर्श के बाद बनाया गया। संविधान बनाने वाली सभा, जिसे 'संविधान सभा' कहते हैं, की पहली बैठक 9 दिसंबर, सन् 1946 को हुई। इसके सदस्यों में विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त महान स्वतंत्रता सेनानी, न्यायविद् और विद्वान सम्मिलित थे। संविधान सभा के कुछ प्रमुख व्यक्ति थे पंडित जवाहरलाल नेहरू, डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ॰ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और सरदार बलदेव सिंह। ये सब महान राजनीतिज्ञ थे। इनके अतिरिक्त कुछ संविधान विशेषज्ञ जैसे अलादी कृष्णास्वामी अय्यर, डॉ॰ बी॰ आर॰ अंबेडकर, श्री के॰ एम॰ मुंशी इसके सदस्य थे। श्रीमती सरोजिनी नायडू और श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित इसकी महिला सदस्या थीं। डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद संविधान सभा के अध्यक्ष थे।

संविधान सभा ने डॉ॰ बी॰ आर॰ अंबेडकर की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति का गठन किया। इसने संविधान का प्रारूप तैयार करने में लगभग 3 वर्ष का समय लिया। नया संविधान, संविधान सभा द्वारा 26 नवंबर, 1949 ई॰ को अपनाया गया और यह 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ।

2. संविधान कानूनों का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है जो सरकार की मूल संरचना और इसके कार्यों को निर्धारित करता है, जिसके अनुसार देश पर शासन चलता है। प्रत्येक सरकार को संविधान में लिखे कानूनों के अनुसार कार्य करने होते हैं। संविधान देश के सभी अन्य कानूनों से श्रेष्ठ है। यह सर्वोच्च कानून है, जो सरकार के अंगों तथा नागरिकों के आधारभूत अधिकारों को परिभाषित एवं सीमांकित करता है।

3. भारत के संविधान में भारत को संप्रभुता संपन्न, समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने का संकल्प लिया गया है। संविधान के इन मूल तत्वों के विषय में जानना आवश्यक है।

   संपूर्ण प्रभुता संपन्न राज्य–इसका अर्थ है कि हम अपने से संबंधित सभी मामलों में स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं और अपनी सरकार चलाने तथा अपनी विदेश नीति बनाने को स्वतंत्र हैं। हम अपने सभी आंतरिक एवं बाह्य मामलों में स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं। इसीलिए उद्देशिका में हमारे देश का एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न राष्ट्र के रूप में उल्लेख किया गया है।

   समाजवादी राज्य–हम जानते हैं कि हमारे देश में अधिकांश लोग गरीब हैं, जबकि अन्य कुछ अमीर हैं। हमारे संविधान का लक्ष्य है कि इस प्रकार की आर्थिक असमानता को कम किया जाए। समाज के सभी वर्गों को आर्थिक विकास के समान अवसर मिलें। आर्थिक असमानता से ही सामाजिक असमानता का जन्म होता है। आर्थिक और सामाजिक समानता पर आधारित समाज का विचार समाजवाद कहलाता है।

   पंथ-निरपेक्ष राज्य–भारत में विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। एक पंथ निरपेक्ष राज्य व्यक्ति को धर्म की स्वतंत्रता देता है। इसका अर्थ है कि सभी धर्मों को एक समान आदर दिया जाता है। अतः हमारे देश में सभी नागरिकों को, भले ही वे हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई अथवा पारसी हों, अपने धर्म का पालन करने एवं प्रचार करने का अधिकार है। राज्य धार्मिक आधार पर नागरिकों में मतभेद नहीं कर सकता। कानून की दृष्टि में सभी धर्मों के नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

   लोकतांत्रिक राज्य–लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को समान राजनीतिक अधिकार प्राप्त होते हैं। एक लोकतांत्रिक सरकार लोगों के प्रतिनिधियों

द्‌वारा चलाई जाती है। भारत में प्रत्येक वयस्क नागरिक को जो 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुका है, मत देने तथा अपने प्रतिनिधि चुनने की प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार है। हमारे देश में सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार भेदभाव के बिना प्रत्येक नागरिक को मत देने तथा चुनाव लड़ने का अधिकार है।

गणराज्य–ऐसा देश जहाँ शक्ति जनता में निहित होती है, गणराज्य कहलाता है। भारत एक गणराज्य है। भारत के नागरिक अपनी सरकार का चुनाव करते हैं, जिसके लिए प्रत्येक पाँच वर्ष बाद आम चुनाव होते हैं। भारतीय राष्ट्रपति का चुनाव 5 वर्षों के लिए होता है और वह राष्ट्र का प्रधान कहलाता है। जिस राज्य में, राज्य का प्रधान, लोगों द्‌वारा एक निश्चित समय के लिए चुना जाता है, वह राज्य गणतंत्र या गणराज्य कहलाता है। इसमें कोई वंशानुगत शासक नहीं हो सकता।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **स्वतंत्रता–**भारतीय नागरिकों को विचार अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म, उपासना एवं अपने व्यक्तित्व के पूर्ण विकास की स्वतंत्रता प्रदान करना ही स्वतंत्रता कहलाता है।

समता–समता का अर्थ है–नागरिकों के संपूर्ण विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना। समता की धारणा जाति, प्रजाति, लिंग और धर्म के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव पर प्रतिबंध लगाती है। भारत का प्रत्येक नागरिक कानून के समक्ष समान है और उसे समान सुरक्षा देना सुनिश्चित किया गया है। समता के बिना स्वतंत्रता निरर्थक है।

2. हमारे देश में अधिकांश लोग गरीब हैं, जबकि अन्य कुछ अमीर हैं। हमारे संविधान का लक्ष्य है कि इस प्रकार की आर्थिक असमानता को कम किया जाए। समाज के सभी वर्गों को आर्थिक विकास के समान अवसर मिलें। आर्थिक असमानता से ही सामाजिक असमानता का जन्म होता है। आर्थिक और सामाजिक समानता पर आधारित समाज का विचार समाजवाद कहलाता है।

3. भारत में विभिन्न धर्मों के अनुयायी रहते हैं। एक पंथ निरपेक्ष राज्य व्यक्ति को धर्म की स्वतंत्रता देता है। इसका अर्थ है कि सभी धर्मों को एक समान आदर दिया जाता है। हमारे देश में सभी नागरिकों

को, भले ही वे हिंदू, मुसलमान, सिक्ख, ईसाई अथवा पारसी हों, अपने धर्म का पालन करने एवं प्रचार करने का अधिकार है। राज्य धार्मिक आधार पर नागरिकों में मतभेद नहीं कर सकता। कानून की दृष्टि में सभी धर्मों के नागरिकों को समान अधिकार प्राप्त हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संविधान सभा की पहली बैठक 9 दिसंबर, सन् 1946 ई॰ को हुई।

2. संविधान सभा के अध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद थे।

3. संविधान कानून का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है, जो सरकार की मूल संरचना और इसके कार्यों को निर्धारित करता है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iv) (i) व (ii) दोनों 2. (iii) डॉ॰ राजेंद्र प्रसाद को

3. (i) 26 नवंबर, 1949 को

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. संविधान सभा ने **बी॰ आर॰ अंबेडकर** की अध्यक्षता में एक प्रारूप समिति का गठन किया।

2. हमारे देश में अधिकांश लोग **गरीब** हैं।

3. बंधुता से ही **एकता** और **अखंडता** सुनिश्चित होती है।

4. भारतीय राष्ट्रपति का चुनाव **पाँच** वर्षों के लिए होता है।

5. **समता** के बिना स्वतंत्रता निरर्थक है।

6. व्यक्ति को धर्म की स्वतंत्रता एक पंथ **निरपेक्ष** राज्य देता है।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

IV. सही जोड़े मिलाइए–

(अ)	**(ब)**
1. संविधान	(i) डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर
2. संविधान निर्माण का कार्य प्रारम्भ हुआ	(ii) डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद
3. संविधान निर्मात्री सभा के अध्यक्ष	(iii) 9 दिसम्बर, 1946 ई॰
4. संविधान प्रारूप समिति के अध्यक्ष	(iv) कानूनों का संग्रह

5.	संविधान पारित हुआ	(v)	प्रतिवर्ष 26 जनवरी को
6.	संविधान लागू हुआ	(vi)	राष्ट्रपति
7.	गणतंत्र दिवस मनाया जाता है	(vii)	26 नवम्बर, 1949 ई० को
8.	भारतीय गणतंत्र का प्रधान	(viii)	26 जनवरी, 1950 ई० को
9.	वयस्क मताधिकार की आयु	(ix)	परस्पर भाईचारा
10.	बन्धुत्व का भाव	(x)	18 वर्ष

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

2 मौलिक अधिकार, कर्तव्य और नीति-निदेशक सिद्धांत

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारतीय संविधान को बनाते समय संविधान निर्माताओं ने इस बात पर विशेष जोर दिया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति ही हमारा उद्देश्य नहीं था क्योंकि हमारे देश में आर्थिक असमानताएँ, सामाजिक भेद-भाव, गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी जैसी अनेक समस्याएँ भी थीं। इन सभी समस्याओं के निराकरण से ही देश समृद्धि के युग की ओर जा सकता है। अतः इसलिए उन्होंने लोगों की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए संविधान में कुछ मार्गदर्शक बातें भी शामिल की थीं। इन मार्गदर्शक बिंदुओं को 'नीति निदेशक तत्व' कहते हैं। संविधान निर्माता चाहते थे कि केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें अपनी नीतियाँ इन सिद्धांतों के आधार पर बनाएँ, जिससे सभी नागरिकों का कल्याण हो सके तथा देश का सामाजिक और आर्थिक विकास हो सके।

कुछ प्रमुख नीति-निदेशक सिद्धांत निम्नलिखित हैं–

(i) महिलाओं और पुरुषों को समान कार्य के लिए समान वेतन मिले।

(ii) 14 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध कराई जाए।

(iii) सरकार लोगों के स्वास्थ्य में सुधार लाने का प्रयास करे तथा नशीले पदार्थ और नशीली दवाओं पर प्रतिबंध लगाए।

(iv) धनी और निर्धन के बीच के अंतर को कम करना अर्थात् सरकार का यह कर्त्तव्य है कि धन को कुछ व्यक्तियों के हाथों में केंद्रित होने से रोके। ये नीति-निदेशक सिद्धांत एक ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं, जहाँ सभी नागरिकों को जीविकोपार्जन के पर्याप्त साधनों हेतु आवश्यक सुविधाएँ व स्थितियाँ प्राप्त हो सकें।

(v) समाज के कमजोर वर्गों विशेषतः अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के हितों की रक्षा होनी चाहिए।

(vi) राज्य को हस्तकलाओं तथा कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए।

(vii) गाय और अन्य दुधारु पशुओं के वध पर रोक लगानी चाहिए।

(viii) जंगलों तथा जंगली जानवरों की सुरक्षा की पूर्ण व्यवस्था होनी चाहिए।

(ix) ग्राम पंचायतों को पर्याप्त शक्ति प्रदान की जाए।

(x) ऐतिहासिक स्मारकों की सुरक्षा की जानी चाहिए।

2. जिस प्रकार हमारे लिए संविधान में मौलिक अधिकारों का वर्णन है, उसी प्रकार कुछ कर्त्तव्यों का वर्णन भी है। इन मौलिक कर्त्तव्यों की व्यवस्था संविधान में 42वें संशोधन में की गई है। कर्त्तव्यों का मुख्य उद्देश्य भारत के नागरिकों में राष्ट्र भावना का विकास करना है। एक नागरिक होने के कारण हमें अपने मौलिक कर्त्तव्यों का निष्ठापूर्ण तरीके से पालन करना चाहिए। राष्ट्र को सशक्त बनाने, एकता, प्रभुत्ता, कल्याण, शांति और आदर्शों को प्राप्त करने के लिए मौलिक कर्त्तव्यों के अनुसार कार्य करना परम आवश्यक है। एक आदर्श नागरिक अपने मौलिक अधिकारों का प्रयोग अपने मौलिक कर्त्तव्यों के लिए करता है। संविधान में निहित या उल्लेखनीय मौलिक कर्त्तव्य निम्नलिखित प्रकार से हैं–

(i) भारतीय संविधान, उसके आदेशों, राष्ट्रध्वज, राष्ट्र प्रतीक, राष्ट्रगान का सम्मान करें।

(ii) उन विचारों व आदर्शों को सदैव हृदय में सँजोकर रखें जो स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राष्ट्रीय आंदोलन की प्रेरणा बने।

(iii) सभी से समान भाव व भ्रातृत्व भाव से व्यवहार करो। नारी के सम्मान को ठेस पहुँचाने वाले व्यवहार व प्रथाओं का परित्याग करो।

(iv) भारत के सांस्कृतिक गौरव और धरोहर; जैसे–मंदिर, मस्जिद आदि सभी का सम्मान करें।

(v) भारत की प्रभुत्ता, एकता एवं अखंडता को संरक्षण प्रदान करें व

इसके महत्त्व को समझें।

(vi) देश की सुरक्षा करें एवं अपने द्वारा किए गए कार्यों को राष्ट्र की सेवा के रूप में अर्पित करें।

(vii) सार्वजनिक एवं ऐतिहासिक संपत्ति की सुरक्षा करें व हिंसक कार्यों और हिंसा से दूर रहें।

(viii) प्राकृतिक धरोहर एवं पर्यावरण की रक्षा करें व जीवों के प्रति दया भाव बनाए रखें।

(ix) व्यक्तिगत व सामूहिक कार्यों सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष का प्रयत्न करें जिससे राष्ट्र उपलब्धि की ऊँचाइयों को पार कर सकें।

(x) ज्ञान, मानवतावाद एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करें।

3. किसी भी देश में नागरिकों के व्यक्तित्व के विकास और उन्नति के लिए अच्छी जीवन दशाओं का होना अति आवश्यक है। हमें मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त अपने विकास के लिए समुचित अवसरों की भी जरूरत होती है। अतः सभी देशों के लोगों को कुछ अधिकार मिलने बहुत जरूरी हैं, ताकि उनका जीवन सार्थक एवं उपयोगी बन सके। एक सफल लोकतंत्र में अधिकार आवश्यक हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ के मानवाधिकार पत्र में कहा गया है कि ''सभी मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेते हैं तथा वे सम्मान तथा अधिकारों में भी समान हैं।'' भारतीय संविधान द्वारा देश के नागरिकों को छह मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं।

(i) **समानता का अधिकार–**हमारे संविधान ने यह व्यवस्था दी है कि भारत में जन्मे सभी नागरिक समान हैं तथा उनके साथ एक समान व्यवहार किया जाना चाहिए। अतः इसलिए हमारे संविधान ने सभी नागरिकों को समानता का अधिकार दिया है।

(ii) **स्वतंत्रता का अधिकार–**इस अधिकार के अंतर्गत निम्नलिखित स्वतंत्रताओं के अधिकार आते हैं–

- कोई भी व्यक्ति अहिंसात्मक (बिना हथियार के) जनसभा कर सकता है।
- कोई भी व्यक्ति लिखकर या बोलकर अपने विचार व्यक्त कर सकता है।
- प्रत्येक व्यक्ति को भारत के किसी भी भाग में रहने का अधिकार है।
- कोई भी व्यक्ति संस्था या संघ बना सकता है।
- प्रत्येक व्यक्ति कहीं भी नौकरी या व्यवसाय कर सकता है। इन अधिकारों के अतिरिक्त शिक्षा के अधिकार सहित प्राण तथा दैहिक

स्वतंत्रता के संरक्षण का अधिकार भी है।

(iii) **धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार**–इस अधिकार के कारण भारत में लोगों को पूर्णरूपेण धार्मिक स्वतंत्रता है। राज्य के समक्ष सभी धर्म समान हैं तथा किसी भी धर्म को दूसरे से अधिक महत्त्व नहीं दिया जा सकता। नागरिक भी अपने धर्मों को मानने के लिए स्वतंत्र हैं। इस अधिकार का उद्देश्य है–देश में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाना। कोई भी सरकारी शिक्षण संस्थान धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकता।

(iv) **शोषण के विरुद्ध अधिकार**–यह अधिकार महिलाओं, बच्चों और गरीबों को शोषण से बचाने का लक्ष्य रखता है। हमारा संविधान मनुष्यों के खरीदने और बेचने पर प्रतिबंध लगाता है अर्थात् दास प्रथा पर रोक लगाता है। यह बेगार तथा बंधुआ मजदूरी पर भी प्रतिबंध लगाता है।

संविधान यह भी कहता है कि 14 वर्ष से कम आयु के बच्चों को फैक्ट्रियों, खदानों और अन्य खतरनाक नौकरियों में नहीं लगाना चाहिए। बाल श्रम के विरुद्ध कानून भी बनाए गए हैं, क्योंकि बच्चे हमारे समाज की पूँजी हैं और उन्हें शिक्षा प्राप्त करने तथा अच्छे वातावरण में रहने का पूर्ण अधिकार है। सरकार ने महिलाओं को शोषण से बचाने के लिए भी कुछ विशेष कानून बनाए हैं।

(v) **संस्कृति और शिक्षा का अधिकार**–भारत एक विशाल देश है तथा यहाँ विभिन्न प्रकार की भाषाएँ, संस्कृति तथा परंपराएँ पाई जाती हैं। प्रत्येक भाषा के अपने साहित्य हैं। प्रत्येक नागरिक अपनी संस्कृति तथा भाषा पर गर्व करता है। वह अपनी भाषा, संस्कृति तथा परंपराओं को संरक्षित करना चाहता है। हमारे संविधान ने उसे ऐसा करने का अधिकार भी दिया है। नागरिकों को शिक्षण-संस्थाओं की स्थापना करने तथा उसे चलाने का अधिकार भी है।

(vi) **संवैधानिक उपचारों का अधिकार**–मौलिक अधिकारों में यह सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह अधिकार संविधान द्वारा प्रदान किए गए अन्य सभी अधिकारों की रक्षा करता है। यदि किसी नागरिक के किसी अधिकार का हनन किया जाता है, तो वह न्यायालय में अपने अधिकार की रक्षा के लिए जा सकता है। न्यायालय द्वारा मौलिक अधिकारों को पुनः लागू कराया जा सकता है। संविधान द्वारा न्यायालय को ऐसे आदेश देने की व्यवस्था है, जिसमें नागरिकों द्वारा मुकदमा करने पर

उनके अधिकारों को पुनः वापस दिलाया जा सके। अतः इसीलिए 'न्यायालय को मौलिक अधिकारों का संरक्षक' कहा जाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संविधान में मान्यता प्राप्त 22 भाषाएँ निम्न प्रकार से हैं–

1. असमिया	2. बंगला	3. बोडो
4. डोगरी	5. गुजराती	6. हिंदी
7. कन्नड़	8. कश्मीरी	9. कोंकणी
10. मराठी	11. मैथिली	12. मलयालम
13. मणिपुरी	14. नेपाली	15. उड़िया
16. पंजाबी	17. संस्कृत	18. संथाली
19. सिंधी	20. तमिल	21. तेलुगू
22. उर्दू		

2. धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार के कारण भारत में लोगों को पूर्ण रूपेण धार्मिक स्वतंत्रता है। राज्य के समक्ष सभी धर्म समान हैं तथा किसी भी धर्म को दूसरे से अधिक महत्त्व नहीं दिया जा सकता। नागरिक भी अपने धर्मों को मानने के लिए स्वतंत्र हैं। इस अधिकार का उद्देश्य है–देश में धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को अपनाना। कोई भी सरकारी शिक्षण-संस्थान धार्मिक शिक्षा नहीं दे सकता।

3. हमारे संविधान ने यह व्यवस्था दी है कि भारत में जन्मे सभी नागरिक समान हैं तथा उनके साथ एकसमान व्यवहार किया जाना चाहिए। इसलिए हमारे संविधान ने सभी नागरिकों को समानता का अधिकार दिया है। संविधान में विशेष रूप से कहा गया है कि कानून के आधार पर सभी नागरिक समान हैं तथा जाति, धर्म, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर उनसे भेदभाव नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही कानून किसी भी नागरिक को उसकी जाति, धर्म या लिंग के आधार पर विशेष सुविधा नहीं दे सकता है। अतः इस प्रकार संविधान ने कानून के समक्ष तथा कानून द्वारा प्रदान की जाने वाली सुरक्षा के मामले में सभी नागरिकों को समान अधिकार दिए हैं।

4. संविधान में भारत के सर्वोच्च न्यायालय को 'संविधान का संरक्षक' घोषित किया गया है, क्योंकि मौलिक अधिकारों का उल्लंघन होने की दशा में सर्वोच्च न्यायालय उसकी रक्षा के लिए उपयुक्त आदेश पारित कर सकता है। इसके अतिरिक्त राज्यों में स्थित उच्च न्यायालय भी

मौलिक अधिकारों की रक्षा करने का कार्य करते हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. शिक्षा के अधिकार का अर्थ है कि 14 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

2. मौलिक अधिकार 6 हैं।
3. भारत के संविधान में नीति-निदेशक तत्वों को सम्मिलित किया गया है।
4. लोगों की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार के लिए संविधान में कुछ मार्गदर्शक बातें शामिल की गई, इन्हें 'नीति निदेशक तत्व' कहते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) बराबर 2. (iii) नागरिक
3. (ii) समान 4. (i) प्रगति

II. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗)

III. सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–

	(अ)		(ब)
1.	मौलिक अधिकार	**(i)**	**न्याय के योग्य**
2.	भाषा एवं साहित्य	**(ii)**	**शैक्षिक एवं सांस्कृतिक अधिकार**
3.	नीति-निदेशक सिद्धांत	**(iii)**	**न्याय के अयोग्य**
4.	बेगार	**(iv)**	**शोषण के विरुद्ध अधिकार**
5.	प्रेस की स्वतंत्रता	**(v)**	**स्वतंत्रता का अधिकार**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

3 केंद्रीय सरकार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. केंद्रीय सरकार या केंद्रशासित सरकार में संसद, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री

तथा मंत्रिपरिषद् होते हैं। अन्य किसी सरकार की भाँति भारत सरकार के भी तीन अंग हैं–विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। कानून निर्माण करने वाली सर्वोच्च संस्था को विधायिका कहा जाता है। हमारे देश में केंद्रीय स्तर पर कानून बनाने वाली संस्था को 'संसद' कहते हैं। भारत में राष्ट्रपति, लोकसभा तथा राज्यसभा मिलकर संसद का निर्माण करते हैं। एक विधेयक तभी कानून बनता है जब वह दोनों सदनों द्वारा स्वीकृत करने के पश्चात् राष्ट्रपति द्वारा भी स्वीकृत कर दिया जाता है। ये कानून राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा मंत्रिपरिषद् द्वारा संपादित होते हैं। सरकार का वह अंग जो कानून को परिभाषित करता है तथा कानून के अनुसार, झगड़े सुलझाता है, न्यायपालिका कहलाती है। सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय तथा अन्य सभी निचले न्यायालय मिलकर न्यायपालिका बनाते हैं।

2. लोकसभा को निम्न सदन यानि संसद का निचला सदन कहते हैं। यह जनता के प्रतिनिधित्वों का क्षेत्र है। इसमें सदस्यों की संख्या जो जनता द्वारा चुने जाते हैं, 550 होती है। इसमें से अधिकतम 20 सदस्य ही संघ (केन्द्र) शासित प्रदेशों से चुने जाते हैं। लोकसभा में दो मनोनीत सदस्य एंग्लो इंडियन समुदाय से (राष्ट्रपति द्वारा) होते हैं। लोकसभा के अध्यक्ष को स्पीकर कहा जाता है जिसका चुनाव लोकसभा के सदस्यों द्वारा किया जाता है।

   लोकसभा का कार्यकाल पाँच वर्षों का होता है और आपातकालीन स्थिति में यह बढ़ाया भी जा सकता है। साथ ही प्रधानमंत्री के विरुद्ध लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव पारित करने पर इसे पाँच वर्षों से पूर्व भंग भी किया जा सकता है। लोकसभा में एक अध्यक्ष तथा एक उपाध्यक्ष होता है, जिनका चुनाव सदस्यों द्वारा ही किया जाता है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. लोकसभा के सदस्य अपने में से ही एक अध्यक्ष और एक उपाध्यक्ष का चुनाव करते हैं जो लोकसभा की कार्यवाहियों को संचालित करते हैं। लोकसभा की बैठकों के दौरान लोकसभा अध्यक्ष सदन की अध्यक्षता करता है तथा उसकी अनुपस्थिति में यही कार्य लोकसभा का उपाध्यक्ष करता है। जब कभी लोकसभा एवं राज्यसभा की बैठक एक साथ होती है तो लोकसभा का अध्यक्ष ही ऐसी बैठकों की अध्यक्षता करता है।

2. **लोकसभा सदस्य के लिए कुछ जरूरी योग्यताएँ–**

(i) वह भारत का नागरिक हो।
(ii) उसकी आयु 25 वर्ष से कम न हो।
(iii) वह मानसिक रोगी न हो।
(iv) वह दिवालिया, सनकी या किसी सक्षम न्यायालय द्वारा चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित न किया गया हो।

3. आपातकाल में राष्ट्रपति अपनी विशेष शक्तियों का प्रयोग करता है। निम्न दशाओं में राष्ट्रपति आपातकाल की घोषणा कर सकता है–
(i) देश में जब वित्तीय संकट की स्थिति हो।
(ii) किसी राज्य में अस्थिरता होने पर।
(iii) जब देश पर बाह्य आक्रमण अथवा गृह-युद्ध की वजह से देश की शांति व सुरक्षा को खतरा हो।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. संसद भवन दिल्ली में स्थित है।
2. राष्ट्रपति की पाँच प्रकार की शक्तियाँ होती हैं–
वित्तीय शक्तियाँ, विधायी शक्तियाँ, न्यायिक शक्तियाँ, कार्यपालक शक्तियाँ, आपातकालीन शक्तियाँ।
3. स्थायी सदन राज्यसभा को कहते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) केंद्रीय सरकार   2. (i) संसद

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. **राष्ट्रपति** की आज्ञा के बिना संसद में कोई बजट प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।
2. राष्ट्रपति को पद से हटाने की प्रक्रिया **महाभियोग** कहलाती है।
3. राज्यसभा के सदस्यों की संख्या अधिक-से-अधिक **250** हो सकती है।
4. लोकसभा, राज्यसभा तथा **राष्ट्रपति** को मिलाकर भारतीय संसद बनती है।
5. केन्द्र के सभी कानून **राष्ट्रपति** द्वारा ही पास होते हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) और गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✗) 3. (✗) 4. (✓) 5. (✓)

IV. सही जोड़े मिलाइए–

उत्तर–	(अ)	(ब)
1.	राज्यसभा के सदस्यों का कार्यकाल	**(i) छह वर्ष**
2.	लोकसभा की सदस्यता के लिए न्यूनतम आयु	**(ii) कम-से-कम 25 वर्ष**
3.	लोकसभा के सदस्यों की संख्या	**(iii) 550**
4.	राज्यसभा के सदस्यों की संख्या	**(iv) 250**

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

4 राज्य सरकार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. भारत सरकार का शासन कार्य तीन स्तरों पर चलाया जाता है। सबसे ऊपरी स्तर पर केंद्र सरकार का शासन है, जिसका कार्य संपूर्ण देश के शासन की देख-रेख करना है। केंद्रीय सरकार देश की राजधानी नई दिल्ली से अपना कार्य सुचारु रूप से चलाती है। अतः इस सरकार का मुखिया प्रधानमंत्री होता है, जो संपूर्ण देश के लिए राष्ट्रीय महत्व के सभी विषयों जैसे वित्त, रक्षा, विदेश नीति आदि विषयों में निर्णय लेता है और इन्हें पूरे देश में लागू कराता है। इस कार्य में उसकी सहायता केंद्रीय विधायिका अर्थात् संसद और केंद्रीय मन्त्रिपरिषद् करती है। भारत सरकार का दूसरा अंग राज्य सरकारें हैं, जो अपने-अपने राज्यों में विभिन्न विषयों में अंतिम निर्णय लेती हैं। राज्य सरकार का मुखिया मुख्यमंत्री होता है जो राज्य विधायिका अर्थात् विधान सभा की सहायता से विभिन्न विषयों जैसे शिक्षा, खेलकूद, स्वास्थ्य, पुलिस आदि विषयों में जलोपयोगी नीतियाँ लागू कराता है। मुख्यमंत्री अपने राज्य का प्रधान होता है और राज्य के महत्व के सभी विषयों में उसके निर्णय अंतिम होते हैं। भारत सरकार का तीसरा और अंतिम स्तर स्थानीय स्तर की सरकारें जैसे नगरपालिका और नगर निगम हैं। नगरपालिका और नगर निगम स्थानीय समस्याएँ; जैसे–सड़कें, बिजली, पानी, तालाब आदि के विषयों में लोगों की समस्याओं को सुलझाने में सहायता देती है, जिससे लोगों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने में सहायक होती हैं।

2. किसी भी राज्य की विधानसभा के सदस्यों की संख्या प्रायः उस राज्य की

जनसंख्या पर निर्भर होती है, परंतु यह संख्या 500 से अधिक नहीं हो सकती। उत्तर प्रदेश की विधानसभा में सबसे अधिक सदस्य हैं।

विधानसभा का कार्यकाल भी लोकसभा की तरह पाँच वर्ष का होता है। लोकसभा की भाँति राज्यों में भी विधानसभा, विधानपरिषद् से अधिक शक्तिशाली होती है।

विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन राज्य की जनता के प्रत्यक्ष वयस्क मताधिकार द्वारा किया जाता है। लोकसभा की तरह इसमें भी मतदान की न्यूनतम आयु 18 वर्ष है। विधानसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति को भारत का नागरिक होना चाहिए तथा उसकी न्यूनतम आयु 25 वर्ष होनी चाहिए।

राज्य विधानसभा या मंडल का उच्च सदन विधानपरिषद् कहलाता है। यह एक स्थायी निकाय है। इसके एक-तिहाई सदस्य प्रत्येक दो वर्ष बाद सेवानिवृत्त होते हैं। इसमें राज्य विधानसभा से एक-तिहाई सदस्य होते हैं तथा इनकी संख्या 40 से कम नहीं हो सकती है।

3. केंद्रशासित प्रदेश प्रायः आकार और जनसंख्या की दृष्टि से छोटे होते हैं। इसी कारण उन्हें राज्य का दर्जा नहीं दिया जाता है। इन प्रदेशों में सीधे केंद्र सरकार का प्रशासन होता है। राष्ट्रपति केंद्रशासित प्रदेशों के लिए प्रशासनिक अधिकारियों की नियुक्ति करता है। इन प्रशासनिक अधिकारियों को मुख्य आयुक्त अथवा उपराज्यपाल कहते हैं।

   केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली को विशेष दर्जा प्राप्त है। इसे राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र कहा जाता है। उपराज्यपाल इसका सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी है। यहाँ एक निर्वाचित विधानसभा तथा मंत्रिपरिषद् भी है।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. विधानसभा के सदस्यों का निर्वाचन राज्य की जनता के प्रत्यक्ष वयस्क मताधिकार द्वारा किया जाता है। लोकसभा की तरह इसमें भी मतदान की न्यूनतम आयु 18 वर्ष है। विधानसभा का सदस्य बनने के लिए व्यक्ति को भारत का नागरिक होना चाहिए तथा उसकी न्यूनतम आयु 25 वर्ष होनी चाहिए।

2. राज्यपाल की तीन शक्तियाँ निम्नलिखित हैं–
   (i) प्रत्येक राज्य का एक राज्यपाल होना चाहिए।
   (ii) राज्य की कार्यकारी शक्तियाँ राज्यपाल के अधीन होंगी और उसके द्वारा संचालित होंगी या तो वे प्रत्यक्ष रूप से या फिर भारतीय संविधानानुसार निहित उसके अधीन अधिकारियों द्वारा

संचालित होंगी।

(iii) राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा उसके द्वारा हस्ताक्षरित व मोहरित आज्ञा-पत्र द्वारा होगी।

3. **राज्यपाल की योग्यताएँ–**

(i) वह भारत का नागरिक हो।

(ii) उसकी आयु 35 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।

(iii) वह किसी सरकारी पद पर न हो।

(iv) विधानमंडल अथवा संसद का सदस्य होने पर राज्यपाल बनने से पहले वहाँ से सेवामुक्त होना पड़ेगा।

4. सरकार के तीनों अंग राज्य विधायिका, राज्य कार्यपालिका और राज्य न्यायपालिका हैं।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मुख्यमंत्री की नियुक्ति राज्यपाल करता है।

2. प्रधानमंत्री की नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

3. जम्मू-कश्मीर को विशेष दर्जा प्राप्त है।

4. राज्यों की विधायिका दो प्रकार की होती हैं–एकसदनीय तथा द्विसदनीय।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) दो 2. (ii) 18 (iii) राष्ट्रपति के

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. वित्त विधेयक के रूप में किसी प्रस्ताव को केवल राज्य की **विधानसभा** में प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. विधानसभा के सदस्य की न्यूनतम आयु **25** वर्ष होनी चाहिए।

3. विधानसभा के सदस्यों की अधिकतम संख्या **500** हो सकती है।

4. **राज्यसभा** को राज्य का उच्च सदन कहा जाता है।

5. केंद्रशासित प्रदेश के प्रशासनिक अधिकारी को **मुख्य आयुक्त** अथवा **उपराज्यपाल** कहते हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

5 मीडिया और लोकतंत्र

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मीडिया राजनीतिक एवं सार्वजनिक वाद-विवाद की जानकारियों का एक प्रमुख स्रोत है। यह सरकार एवं लोकमत को हम तक पहुँचाती है। मीडिया वर्तमान तंत्र के दोषों से अवगत करवाती है एवं जनसाधारण की गतिविधियों के लिए सही निर्णयों में अहम् भूमिका निभाती है। इन दिनों मीडिया बहुत तेज एवं क्रियाशील हो गया है, यह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के प्रत्येक पहलू को समाविष्ट करती है।

मीडिया को दो भागों में बाँटा जाता है। ये दो भाग निम्न प्रकार से हैं–

(क) परंपरागत मीडिया–इस मीडिया के अंतर्गत उन माध्यमों को सम्मिलित किया जाता है, जिनका प्रयोग वर्तमान से कुछ पहले तक किया जाता था। इसके अंतर्गत (i) डाक, (ii) कोरियर, (iii) हस्तांतरण, (iv) टेलीग्राफ और (v) टेलेक्स को सम्मिलित किया जाता है। ये माध्यम सूचनाओं को कुछ विश्राम के साथ लोगों तक पहुँचाते थे। इनमें लगने वाला समय देश, काल और स्थिति से बहुत अधिक प्रभावित होता था। अतः इन्हें धीमी गति के संचार माध्यम भी कहा जाता है।

(ख) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को हम वर्तमान व भविष्य का मीडिया भी कह सकते हैं। इस मीडिया के प्रमुख माध्यम (i) टेलीफोन, (ii) मोबाइल फोन, (iii) फैक्स, (iv) ई-मेल, (v) इंटरनेट और (vi) वीडियो कांफ्रेसिंग है। ये माध्यम देश, काल और स्थिति से प्रभावित हुए बिना तीव्र गति से सूचनाओं का संचारण करते हैं। इनके द्वारा एक ही पल में सूचना को संसार के किसी भी भाग में भेजा जा सकता है। यह हमारे जीवन के अभिन्न अंग हैं।

2. **मीडिया और लोकतंत्र–**जनता से संपर्क स्थापित करने की विभिन्न विधियों को 'मीडिया' कहा जाता है। आधुनिक लोकतंत्र में इसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। चूँकि लोकतंत्र 'लोगों की, लोगों के द्वारा तथा लोगों के लिए सरकार' है; अतः लोकतंत्र का शासन बल-प्रयोग से नहीं, अपितु सम्मति तथा स्वीकृति से चलता है। सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार का प्रयोग करने तथा अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करने का

अधिकार दिया जाता है। इसीलिए सत्ताधारी एवं विपक्षी दल लोगों के साथ संपर्क बनाए रखने तथा अपने पक्ष में जनमत बनाने का प्रयत्न करते हैं। यही कारण है कि प्रत्येक लोकतांत्रिक देश जनता को जनमत बनाने तथा व्यक्त करने की स्वतंत्रता के सभी अवसर प्रदान करता है। अतः इस प्रकार जनसंपर्क तथा जनसंचार के विभिन्न साधन जनमत तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अतिरिक्त मीडिया विश्व में होने वाली प्रत्येक घटना की सूचना उपलब्ध कराने, लोगों को प्रबुद्ध रखने तथा स्वस्थ जनमत विकसित करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक है।

कभी-कभी देखा जाता है कि एक समस्या के संबंध में विभिन्न समाचार-पत्रों में विभिन्न प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की जाती हैं, परंतु मीडिया को चाहिए कि वह सही और संतुलित जानकारी दे।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मीडिया के निम्नलिखित चार मौलिक कर्तव्य हैं–

(i) सूचना देना (ii) शिक्षित करना

(iii) मनोरंजन करना तथा (iv) राह दिखाना।

विकसित समाजों में इन चारों कार्यों को उचित रूप से क्रियान्वित किया जाता है।

2. किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए और सरकारी काम-काज में पारदर्शिता लाने के उद्देश्य से सन् 2005 में सूचना का अधिकार अधिनियम पारित किया गया। इसके अंतर्गत प्रत्येक व्यक्ति को यह अधिकार दिया गया है कि वह किसी भी संदर्भ में (राष्ट्रीय सुरक्षा इत्यादि के अतिरिक्त) सरकारी कार्यालयों से सूचना प्राप्त कर सकता है। आज के दौर में सरकारी अधिकारियों पर नियंत्रण का यह एक प्रमुख साधन है।

3. जन-संचार में मीडिया की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मौलिक स्तर पर जन-संचार मीडिया जनता से संचरण करता है। यह वास्तव में हमारे जीवन में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है और एक 'भूमंडलीय ग्राम' की रचना करता है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. सूचना का अधिकार अधिनियम 2005 में पारित हुआ।

2. मीडिया को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ माना जाता है।

3. आधुनिक और तीव्र विकासशील संसार में, जन-संचार मीडिया सूचना के फैलाव, ज्ञान उपलब्ध कराने, लोगों तक तीव्र और प्रभावी साधन

पहुँचाने का सशक्त उपकरण है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (iii) मीडिया 2. (ii) विश्वसनीय

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. मीडिया **समाज** और **सरकार** पर विशेष निगरानी रखता है।
2. स्वस्थ **जीवन** के लिए सूचना का फैलाव आवश्यक है।
3. अच्छी सूचनाएँ **जीवन** को अच्छा बनाती हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

6 लैंगिक भेदभाव

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. लिंग भेद समाज निर्मित होता है। समाज में शारीरिक भिन्नताओं के आधार पर इन्हें परिभाषित किया जाता है। यह रस, प्रकृति और समाज स्त्री-पुरुष की शिक्षा पर आधारित होता है। सामाजिक संबंधों पर समाज की असमान प्रणाली ही लिंग भेद होती है।

लिंग भेद की उत्पत्ति सामाजिक ढाँचे में होती है। लिंग भेद का प्रभाव लोगों के अवसरों, सामाजिक भूमिकाओं प्रतिक्रियाओं में देखा जा सकता है। जाति, कार्यक्रम को लागू करने और किसी संख्या की परियोजना के लक्ष्य प्रत्यक्ष रूप से लिंग भेद से प्रभावित होते हैं। ये भौतिक संसाधनों का वितरण भी तय करते हैं।

हमारे जीवन में लिंग भेद संबंधी कई झंझट हैं, जिनमें सम्मिलित हैं–

(i) श्रम का विभाजन
(ii) घर के भीतर और बाहर परिवार के सदस्यों के उत्तरदायित्व
(iii) शिक्षा
(iv) व्यावसायिक बढ़ावे के अवसर
(v) नीति निर्माण

विकास योजनाओं और नीतियों में लिंग संबंधी मुद्दों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। लिंग समानता, संसाधनों का उचित वितरण और सामाजिक, आर्थिक विकास के अवसर सभी एजेंडों में मुख्य विषय हैं। लिंग समानता और जीवंत विकास के मध्य मौलिक संबंधों की जाँच करने के प्रयास किए गए हैं।

2. **असमानता के मूल कारक–**असमानता के मूल कारक निम्नलिखित हैं–

   (i) **बालिका संतान के प्रति भेदभाव–**बालिका संतान के साथ भेदभाव के अनेक कारण हैं। परिवार में लड़के के जन्म पर खुशियाँ मनाई जाती हैं; क्योंकि उससे वंश चलता है, जबकि लड़कियाँ अपने विवाह के बाद अपनी ससुराल चली जाती हैं। लड़कियों का जन्म परिवार पर बोझ समझा जाता है। इसका कारण यह है कि उसके लालन-पालन पर धन व्यय करने के बाद भी विवाह के अवसर पर उसके लिए दहेज देना पड़ता है।

   (ii) **स्त्री-विरोधी सामाजिक परंपराएँ–**प्राचीन भारतीय समाज में लड़कियों का विवाह अल्पायु में ही हो जाता था। उनके पति की अल्पायु में मृत्यु हो जाने पर विधवा स्त्रियों को जीवन भर कष्ट झेलने पड़ते थे। शुभ अवसरों पर विधवा स्त्रियों का मुँह देखना भी अपशकुन माना जाता था। विधवाओं को पुनः विवाह की अनुमति प्राप्त नहीं थी और उनका जीवन तिरस्कारपूर्ण होता था। विधवा स्त्री के लिए 'सती' होना सबसे बड़ा गुण समझा जाता था और प्रायः विधवाओं को अपने पति के साथ ही सती होने के लिए विवश किया जाता था। दहेज प्रथा के कारण बहुत-सी निर्धन लड़कियों को आजीवन अविवाहित भी रहना पड़ता था।

   (iii) **समाज में महिलाओं का निम्न स्तर–**लिंग पर आधारित सामाजिक भूमिकाएँ स्त्रियों व पुरुषों द्वारा निभाई जाने वाली गतिविधियों की प्रकृति व प्रकार को परिभाषित करती हैं। पुरुष समाज में सक्रिय भूमिका निभाते हैं जबकि स्त्रियाँ घर में मुख्य भूमिका निभाती हैं। स्त्रियों को सामाजिक गतिविधियों के लिए समय नहीं मिलता है। उसी तरह से, उनको शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों में भेदभावपूर्ण नीतियों का सामना करना पड़ता है। उनके द्वारा किए गए घरेलू कार्यों को कोई महत्त्व नहीं मिलता। उससे वे स्वयं को स्वतंत्र अनुभव नहीं करतीं।

(iv) **स्त्रियों की शिक्षा की उपेक्षा**–स्त्रियों को शिक्षा देना व्यर्थ समझा जाता था, क्योंकि ऐसा माना जाता था कि उन्हें रोजगार की आवश्यकता नहीं है।

3. उन्नीसवीं शताब्दी में अनेक सामाजिक तथा धार्मिक सुधारकों ने भारत में स्त्रियों की दुर्दशा को सुधारने के लिए अनेक प्रयास किए। इन सुधारकों में राजा राममोहन राय का नाम सर्वोपरि है। ईश्वरचंद्र विद्यासगर, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैय्यद अहमद खान आदि के योगदान भी उल्लेखनीय हैं। उन्होंने स्त्रियों की शिक्षा पर भी विशेष बल दिया। राजा राममोहन राय के ही प्रयासों से लॉर्ड बैंटिक ने सती प्रथा को कानूनी रूप से निषिद्ध किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने महिलाओं के लिए अनेक स्कूल खोले तथा विधवा-पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया। सर सैय्यद अहमद खान ने मुस्लिम समाज में प्रचलित पर्दा प्रथा और बहुपत्नी प्रथा की निंदा की तथा मुस्लिम महिलाओं की शिक्षा की वकालत की।

   स्वतंत्रता के पश्चात् भारत सरकार ने निम्नलिखित कानूनी प्रावधानों द्वारा लैंगिक असमानता को दूर करने के प्रयास किए–

   (i) महिलाओं को अपने पिता की संपत्ति में पुत्रों के बराबर अधिकार दिलाया गया। 'हिंदू कोड बिल' तथा 'कमल एक्ट' इसी दिशा में किए गए प्रयास थे।

   (ii) महिलाओं को सार्वभौम वयस्क मताधिकार द्वारा पुरुषों के समान राजनीतिक अधिकार प्रदान किए गए।

   (iii) बालिकाओं एवं महिलाओं के लिए पृथक् स्कूल तथा कॉलेज खोले गए।

   (iv) सरकार ने दहेज को अवैध घोषित कर दिया तथा माँगने वालों को दंडित करने का प्रावधान निश्चित किया।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. गाँवों में महिलाओं, लड़कियों की शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है, क्योंकि गाँवों में सभी लोग शिक्षित नहीं होते हैं तथा गाँवों में बहुत सारी रूढ़ियों का प्रचलन होता है।

2. लिंग-भेद समाज निर्मित होता है। समाज में शारीरिक भिन्नताओं के आधार पर इन्हें परिभाषित किया जाता है। यह रस, प्रकृति और समाज स्त्री-पुरुष की शिक्षा पर आधारित होती है।

3. समान कार्य के लिए महिलाओं को पुरुषों से कम वेतन दिया जाता

है। आर्थिक क्षेत्र की महिलाओं के साथ ये सबसे बड़ा भेदभाव है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. कई ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षा देना इसलिए व्यर्थ समझा जाता है, क्योंकि वहाँ के लोग सोचते हैं कि लड़की को तो शादी करके दूसरे घर जाना होता है।

2. हिंदू कोड बिल 1955-56 में पारित चार कानून थे, जिनका उद्देश्य हिंदू समाज में विद्यमान कुछ असमानताओं को दूर करना था।

3. लिंग आधारित असमानता एक प्रमुख सामाजिक बुराई है।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (ii) निषिद्ध 2. (iii) अवैध

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. स्त्रियों को **सरकार** के द्वारा राजनीतिक अधिकार दिए गए हैं।

2. महिला सशक्तिकरण बिना **आय-उत्पादक** गतिविधियों के नहीं हो सकता।

3. **सरकार** ने स्त्रियों तथा बालिकाओं के लिए अनेक स्कूल खोले।

4. लिंग भेद की उत्पत्ति **सामाजिक** ढाँचे में होती है।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✗) 2. (✓) 3. (✓) 4. (✗) 5. (✓)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।

7 हमारे आस-पास के बाजार

अभ्यास

(क) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. विभिन्न प्रकारों के बाजारों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू इस प्रकार से हैं–

(i) **पड़ोस का बाजार–**मोहल्ले की दुकान से हमें कई प्रकार के लाभ होते हैं तथा हम इन दुकानों से दिन के किसी भी समय अपनी जरूरत का सामान खरीद सकते हैं। ये दुकानें हमें समान उधार लेने की सुविधा

भी उपलब्ध कराती हैं। इन दुकानों का सबसे बड़ा नकारात्मक पहलू यह है कि हम वह सामान भी ले सकते हैं जिसकी हमें आवश्यकता नहीं होती है, क्योंकि बहुधा हमें सामान का मूल्य बाद में चुकाना होता है।

इसके अतिरिक्त कई बार सामान हमें महँगा अथवा निम्न गुणवत्ता का मिलता है।

(ii) **साप्ताहिक बाजार–**साप्ताहिक बाजारों में एक ही तरह के सामानों की कई दुकानें होती हैं, जिससे उनमें आपस में प्रतियोगिता भी होती हैं। साप्ताहिक बाजारों में ग्राहक प्रायः मोल-भाव करते हैं। आपस में प्रतियोगिता के कारण दुकानदार कम-से-कम मुनाफे पर भी अपना माल बेचने के लिए तैयार हो जाते हैं। साप्ताहिक बाजारों का एक लाभ यह भी है कि जरूरत का सभी सामान एक ही स्थान पर मिल जाता है। सब्जियाँ, फल, किराने का सामान, कपड़े, बर्तन आदि सभी चीजें इन बाजारों में उपलब्ध हो जाती हैं। अलग-अलग सामान के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में जाने की आवश्यकता नहीं होती।

साप्ताहिक बाजारों से सामान खरीदने का एक नकारात्मक पहलू यह है कि यहाँ दुकानदार और ग्राहक एक-दूसरे से परिचित नहीं होते तथा एक बार सामान खरीदने के बाद उसे वापस करना या बदलना संभव नहीं होता। इसका दूसरा नकारात्मक पहलू है कि यहाँ आप उधार समान नहीं खरीद सकते।

2. **मोहल्ले की दुकानें–**हमारे मोहल्ले में कई प्रकार की दुकानें होती हैं, जो हमें विभिन्न प्रकार की सेवाएँ और सामान उपलब्ध कराती हैं। हम प्रायः मोहल्ले की डेयरी से दूध, किराना व्यापारी से दाल, चावल, आटा, मसाले, तेल, घी, साबुन आदि खरीदते हैं। दवाइयों की दुकान से दवाइयाँ तथा स्टेशनरी की दुकान से कागज, पेंसिल, कलम आदि खरीदते हैं। इस तरह की दुकानें पक्की और स्थायी होती हैं। हमारे आस-पास कुछ दुकानें ऐसी भी होती हैं जो अन्य विभिन्न प्रकार की सेवाएँ प्रदान करती हैं; जैसे गैराज, जहाँ हम अपने वाहनों को ठीक कराते हैं। बिजली के सामान की दुकान, जहाँ से हम बिजली का सामान खरीदते हैं, नाई की दुकान, ड्राइक्लीनिंग की दुकान आदि। कुछ छोटे दुकानदार सड़क के किनारे सब्जियाँ, फल आदि बेचते हैं।

मोहल्ले की दुकानें कई अर्थों में बहुत उपयोगी होती हैं। एक तो वे नजदीक होती हैं और दूसरे, इन दुकानों से हम अपनी दैनिक आवश्यकताओं की

वस्तुएँ किसी भी दिन तथा किसी भी समय खरीद सकते हैं।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. **बाजारों की श्रृंखला–**उपभोक्ताओं तक पहुँचते-पहुँचते वस्तुओं को विभिन्न बाजारों से गुजरना पड़ता है। सामान का उत्पादन कारखानों, खेतों और घरों में होता है लेकिन हम कारखानों और खेतों से सीधे सामान नहीं खरीदते हैं। वस्तुओं का उत्पादन करने वाले भी हमें कम मात्रा में; जैसे एक किलोग्राम सब्जी या एक जोड़ा जूता आदि बेचने में कोई रुचि नहीं रखते। वे लोग जो वस्तु के उत्पादक और वस्तु के उपभोक्ता के बीच होते हैं, उन्हें व्यापारी कहा जाता है। पहले थोक व्यापारी बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेता है। जैसे सब्जियों का थोक व्यापारी 25 से 100 किलोग्राम तक सब्जियाँ खरीद लेता है, इन्हें वह दूसरे व्यापारियों को बेचता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों व्यापारी होते हैं। व्यापारियों की लंबी श्रृंखला का वह अंतिम व्यापारी जो अंततः वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है, खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाजार या फिर शॉपिंग कॉम्प्लैक्स में सामान बेचता मिलता है।

प्रत्येक शहर में थोक बाजार का एक क्षेत्र होता है और यहीं वस्तुएँ पहले पहुँचती हैं तथा यहीं से वे अन्य व्यापारियों तक पहुँचती हैं। उदाहरण के लिए सड़क के किनारे की दुकान का छोटा व्यापारी बड़ी संख्या में प्लास्टिक का सामान शहर के थोक व्यापारी से खरीदता है। ऐसा भी हो सकता है कि वह बड़ा व्यापारी अपने से भी बड़े थोक व्यापारी से स्वयं सामान खरीदता हो। शहर का बड़ा थोक व्यापारी प्लास्टिक का यह सामान कारखाने से खरीदता है और उन्हें बड़े गोदामों में रखता है। अतः इस तरह से बाजार की एक श्रृंखला बनती है।

2. आजकल इंटरनेट द्वारा सामान खरीदने की सुविधा सर्वत्र उपलब्ध है। हम इंटरनेट पर इच्छित वस्तु का ऑर्डर कर सकते हैं जो तय समय सीमा हम तक पहुँचा दी जाती है और हम इसका भुगतान अपने क्रेडिट कार्ड द्वारा अथवा वस्तु के आने पर नकद रूप में कर सकते हैं।

3. इस व्यवसाय में सुबह 3 बजे से ही सब कुछ आरंभ हो जाता है। पहले थोक व्यापारी बड़ी मात्रा या संख्या में सामान खरीद लेता है जैसे सब्जियों का थोक व्यापारी 25 से 100 किलोग्राम तक सब्जियाँ खरीद लेता है। इन्हें वह दूसरे व्यापारियों को बेचता है। यहाँ खरीदने वाले और बेचने वाले दोनों

व्यापारी होते हैं। व्यापारियों की लंबी श्रृंखला का वह अंतिम व्यापारी जो अंततः वस्तुएँ उपभोक्ता को बेचता है, खुदरा या फुटकर व्यापारी कहलाता है, जो आपको पड़ोस की दुकानों, साप्ताहिक बाजार या फिर शॉपिंग कॉम्प्लैक्स में सामान बेचता मिलता है।

(ग) अतिलघु उत्तरीय प्रश्न–

उत्तर– 1. मॉल बहुमंजिलें इमारतें होती हैं, जहाँ एक साथ ऊपर नीचे बहुत सारी दुकानें होती हैं। इन दुकानों में विभिन्न प्रकार की चीजें मिलती हैं और एक ही स्थान पर बहुत सारी चीजें मिलती हैं। अतः इन बहुमंजिल इमारतों को ही मॉल कहते हैं।

2. मोहल्ले की दुकानों के दो लाभ निम्नलिखित हैं–
   (i) यहाँ से हम चीजें उधार भी ले सकते हैं।
   (ii) हमें सारी जरूरत की चीजें अपने पास ही उपलब्ध हो जाती हैं।

3. आम जरूरत की वस्तुओं को थोड़ी-थोड़ी मात्रा में बेचने वाले विक्रेताओं को फुटकर विक्रेता कहते हैं।

(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

I. सही विकल्प पर (✓) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (i) साप्ताहिक बाजार 2. (i) दुकानदार 3. (i) वस्त्र

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

उत्तर– 1. साप्ताहिक बाजार का दुकानदार **घर** से व्यापार करता है।
2. प्रत्येक शहर में **बाजार** का एक क्षेत्र होता है।
3. हमें कई तरह की **सुविधाएँ** उपलब्ध कराती हैं।
4. शहरों में कुछ **बड़े व्यापारी** भी होते हैं।

III. सही कथन के सामने (✓) तथा गलत कथन के सामने (✗) का चिह्न लगाइए–

उत्तर– 1. (✓) 2. (✗) 3. (✓) 4. (✓) 5. (✗)

परियोजना कार्य

उत्तर– छात्र स्वयं करें।